वर्ष 28, अंक 06 जून-2026 ₹ 3/-

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी।

SHABARI SALEM

ज्ञानात् परं सुखम्

शबरी

Shabari Siksha Samachar शिक्षा समाचार

तमिलनाडु के सेलम जिले से पिछले 28 वर्षों से बिना किसी अनुदान के निरंतर प्रकाशित होनेवाली,
एकमात्र हिन्दी मासिक पत्रिका है।

शिव नाम भजते रहते, कूटरुव नायनार ।
शिव मंदिर की रक्षा कर, मुक्ति पा बने अमर ।।

शबरी परिवार से एक और भेंट

अक्षया हिन्दी पाठ्यपुस्तक

बाल कक्षाओं से पाँचवीं कक्षा तक के छात्रों के लिए

आज ही खरीदें...
Get your copies now...

- ❖ मन भावन शैली
- ❖ सामाजिक मूल्यों पर आधारित
- ❖ सरल और ज्ञानवर्धक अभ्यास
- ❖ भाषा कौशल पर आधारित
- ❖ सृजन तथा चिंतना शक्तिवर्धक
- ❖ सरल तथा शुद्ध भाषा
- ❖ छात्रों में रुचि उत्पादक
- ❖ अभिभावक का प्रिय पुस्तक
- ❖ श्रेष्ठ अध्यापक का मन मोह पुस्तक

Shabari Book House proudly presents

Akshaya Hindi Paatyapusthak

a new series of Hindi third language books that inspire the learner

- ✦ Captivating storytelling
- ✦ Value-driven lessons
- ✦ Engaging book exercises
- ✦ Enhanced language proficiency
- ✦ Boosts creativity & critical thinking
- ✦ Lucid, effective language
- ✦ Sparks student curiosity
- ✦ Parent-friendly content
- ✦ The best teachers' Choice

Price

LKG	₹ 90/-
UKG	₹ 100/-
Std-1	₹ 150/-
Std-2	₹ 150/-
Std-3	₹ 150/-
Std-4	₹ 150/-
Std-5	₹ 150/-

SHABARI BOOK HOUSE
"Shabari Palace"
194, Second Agraharam,
Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414,
98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सुखम्

पढ़ो मन भरके

शबरी
शिक्षा समाचार

वर्ष 28, अंक 06 मूल्य ₹ 3/- जून - 2026

प्रधान संपादक

एम. वेंकटेश्वरन

संयुक्त संपादक

आर. जयकरन

सहायक संपादक

आर.जे. संतोष कुमार

कार्यालय

Shabari Siksha Samachar

R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com

संस्थापक व प्रकाशक

Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.

समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।

SHABARI BOOK SALES

Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414

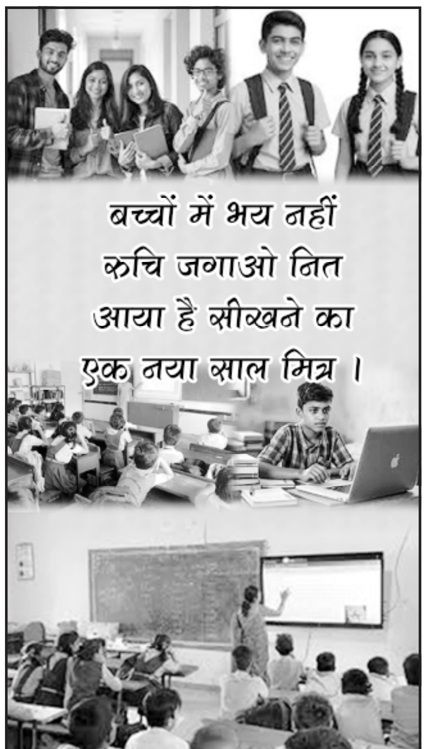

VANI VIKAS NUMBER

0427-4265414
0427-4552100

Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

इस अंक में

संपादक की कलम से 5
अनमोल वचन 6
इच्छुक 7
रीति 8
संतोष.............................. 10
दोस्ती.............................. 11
अमर शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल'. 12
लक्ष्य पूर्ण करके ही लौटो........ 14
समय 15
श्री कृष्ण भजन 16
सृष्टि की रचियता – माँ 17
नीरज स्मृति 18
सफर 19
मन तो बना....................... 19
लोकतंत्र की आहुति...! 20
परी की बिल्ली 20
बंगाल 21
माँ को समर्पित 21
हिन्दी 22
हे प्रेम वाहिनी... 22
लोकतंत्र 23
तुझको दीपक ही बनना है........ 23
पिता की रौशनी.................. 24
अविभाज्य 24
नयनों में वही समाया है ।......... 25
महान संत शिव भक्त–तमिल नायनमार 28
ग़ज़लें 30
भानु नित्य भोर में 30
गौरैया का आर्तनाद 31
अंतिम फैसला 31
जीवन निर्माण 32
शिव वंदन 32
अनुभव और उद्‌गार बहुमूल्य हैं .. 33
गीत 33
पलते ब्रह्मांड उसमें 34
मन का अंधियारा 34
माँ तेरी याद बहुत आई 35
सांस्कृतिक संस्कार 36
रास्ते जो घर ले जाते हैं.......... 36
आईना........................... 37
माँ रिझाऊँ कैसे... 37
खरगोश 38
पूर्णिका 38
फलों का राजा आम 39
ऐ जेठ की दुपहरी 40
पाठकों के पत्र 40
नवांकुर 42
पठितौ, अभिरुचितौ, अनूदितौ ... 44
महान 45
தமிழமுது 46
அருள் உலா 47

வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

தேர்வு நடைபெறும் மாதம்	தேர்வு நடைபெறும் தேதி	தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி	₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த
ஜூலை-2026	19-07-2026	01-04-2026 to 31-05-2026	05-06-2026
அக்டோபர்-2026	18-10-2026	01-07-2026 to 31-08-2026	05-09-2026
ஜனவரி-2027	24-01-2027	01-10-2026 to 30-11-2026	05-12-2026
ஏப்ரல்-2027	18-04-2027	01-01-2027 to 28-02-2027	05-03-2027

வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

★ **D.D.** ***மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.***

our web portal @ **https://shabari.in**

✍ ***संपादक की कलम से ...***

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

बदलती हुई दुनिया 'प्रगति' के नाम पर निरंतर आगे बढ़ रही है । जहाँ सब जीव-जंतुओं को जीने का अधिकार प्राप्त है, वहाँ मानव अपने अधिकारों का विस्तार पुराने समय से आज तक करता आ रहा है । तुलना के लिए हजारों साल पीछे जाने की जरूरत नहीं । मात्र दस साल पहले की दुनिया और आज की दुनिया में जमीन-आसमान का अंतर हम साफ देख सकते हैं ।

प्रकृति से होड़ लगाते हुए मानव ने अपने जीवन को मशीनों तथा नई खोजों के माध्यम से सरल और सुविधाजनक बनाने का निरंतर प्रयास किया है । दुनिया बदल रही है, दुनिया बढ़ रही है । हर क्षेत्र में नई ऊर्जा, नई तकनीक पैदा करने के प्रयास जारी है । मानव जीवन का स्तर काफी ऊपर उठ चुका है । एक जमाना था जब लोग मीलों पैदल चलते थे । आज गाड़ियों की मदद से घंटों का सफर मिनटों में तय हो जाता है । जिंदगी के हर क्षेत्र में समय लेने वाले कठिनतम काम भी अब तकनीक से सरलतम हो गए हैं ।

परंतु उन्नति की इस चरम सीमा पर पहुँचने के बाद भी दुनिया संकट से अछूती नहीं है । कुछ राष्ट्रों के आपसी टकराव और तनाव के कारण वैश्विक शांति खतरे में है । ऐसे समय में हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह देशहित को सर्वोपरि रखे ।

हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने बार-बार देशवासियों को बचत का संदेश दिया है । आज जो कमा रहे हैं, उसे सोच-समझकर खर्च करें । फिजूलखर्च से बचें । 'बचत करो, सुखद जिओ' - इस मंत्र को मन में रखकर ही हमें जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए । आवश्यक खर्च के बाद जितना हो सके उतना बचाएँ । एक-एक नागरिक की बचत से ही घर समृद्ध होगा और घरों की समृद्धि से देश की उन्नति संभव है ।

इसलिए 'शबरी शिक्षा समाचार' का आह्वान है - हर दिल में यह बात बैठ जाए: 'बचत करो, सुखद जिओ ।'

जय हिन्द ! जय हिन्दी !!

अनमोल वचन

प्यार का रोग (शरीर का रंग बदलना)

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर के अनुसार – मैंने अपने प्रियतम को मुझसे दूर जाने की सहमति दे दी । लेकिन उनसे दूर हो जाने पर उनके वियोग से जो दुख भरा है उससे मेरे शरीर पर पीला रंग चढ रहा है ।

मेरे प्रियतम के मुझसे दूर चले जाने पर उनके वियोग से मेरे शरीर पर प्यार से उत्पन्न पीला रंग मुझमें गर्व उत्पन्न करते हुए बढ रहा है ।

मुझसे दूर होते हुए, मेरे प्रियतम ने मुझे प्रेम रोग के साथ शरीर भर पीला रंग भरने देकर मुझसे मेरी सुंदरता और शरम दोनों ले गये ।

मैं उनके बारे में ही सोचती हूँ, उनके गुणों के बारे में ही बता रही हूँ । फिर भी उनकी दूरी तथा काम से उत्पन्न यह पीले रंग का रोग मुझमें कैसे आया ?

मुझे छोडकर मेरे प्रियतम कुछ दूर ही जा चुके हैं, अब भी दिख रहे हैं । इतने कम समय में मुझमें यह पीला रंग का काम रोग आया कैसे ?

जिस प्रकार दिये की लौ कम हो जाते ही अंधकार फैलने लगता है उसी प्रकार मेरे प्रियतम के आलिंगन के छूटते ही मेरे शरीर में पीला रंग फैलने लगता है ।

मेरे प्रियतम को गले लगाकर उनके बाहों में पडी रही । उनसे ज़रा हटाकर लेटते ही काम रोग रूपी पीला रंग मेरे शरीर में फैलने लगा है ।

लोग कहते हैं कि मेरे शरीर में पीला रंग फैल रहा है । लोग कभी यह कह नहीं पाते कि इसके शरीर में पीला रंग फैलने का कारण मेरे प्रियतम के दूर जाना ही है ।

इस दूरी के लिए मुझे मनानेवाले मेरे प्रियतम अगर अच्छी स्थिति में रहे तो मेरे शरीर का यह पीला रंग और बढते जावें ।

मुझे इस दूरी के लिए मनानेवाले मेरे प्रियतम को अगर कोई प्यारहीन न कहें तो पीले रंगवाली कहलाने में मुझे गर्व महसूस होगा ।

इच्छुक

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

वह आता...
दूर से आवाज देते हुए, चिल्लाता
रास्ते पर आता ।
साफ कपड़ा पहन हाथ भर मैल
चल रहा गाड़ी उसे टेक
स्वस्थ बना रखने को – सफाई करने को
कचरा ले जाने के डिब्बे सहित
दूर से आवाज देते हुए, चिल्लाता रास्ते पर आता ।
वह आता...
दूर से आवाज देते हुए, चिल्लाता
रास्ते पर आता ।
साथ दो बहनें भी हैं तत्पर रहती हुई
बाएँ ओर के घरों से एक लाती
और एक दाहिने से कचहरे लाने हाथ बढ़ाती ।
धूप से सूख ओंठ जब जाते
लोगों से, कहीं से वे तब कुछ भी नहीं पाते
अपना दुख छुपा कर आगे बढ़ जाते
कूड़े कचरे को कोई सही रूप से अलग कर नहीं देते
हाथ में नहीं कुछ लोग गली में फेंक देते ।
वह आता...
दूर से आवाज देते हुए, चिल्लाता
रास्ते पर आता ।
सुनो ! मानव हैं वे भी सफाई के कर्मचारी
मान सम्मान करो उनका तुम
तभी जग में जी सकेंगे स्वस्थ रहकर हम ।

रीति

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

मम्मी दादू आ रहे हैं जल्दी उठो और दरवाजा खोलो । मम्मी सुनो तो सही दरवाजा खोलो ना जल्दी । चिल्लाते हुए अपनी मम्मी को उठाने का प्रयत्न कर रहा था शिवम । अरे शिवम, मैं अभी तो बैठी थी । रसोई में काम निपटा रही थी । दादू आ रहे हैं, सही बात है लेकिन तुम क्यों दरवाजा खोल नहीं सकते हो ? ऐसा क्या काम है जो तुम मुझे उठा रहे हो ? दादी माँ कहाँ है ? उनको तो भी बोल सकते हो या खुद ही कर सकते हो । मम्मी, दादी तो पूजा कर रही है । आप जाकर खोल दो ना । मैं दादू के लिए पानी ला रहा हूँ । कहते हुए रसोई की ओर बढ़ने लगा शिवम । तब तो ठीक है बेटा जाओ तुम पानी लाओ, मैं जाकर दरवाजा खोल दूँगी । अपने बेटे को आनंद भरी नजर से देखती हुई दरवाजा खोलने गई दीपिका । जब कभी बच्चे बहुत बड़े जैसे बात करने लगते हैं उनकी बातों में माता-पिता को एक अलग ही आनंद मिल जाता है । अपना बेटा जो बड़े जैसे बात कर रहा था उसपर हँसती हुई दरवाजा खोलने गई दीपिका ।

बाहर क्या धूप है ? गर्मी इतनी बढ़ गई है कि घर से बाहर निकलना बहुत ही मुश्किल लग रहा है । ऐसा लग रहा है कि चमड़ा जल रहा है । सुबह ही इतनी गर्मी हो तो दिन के चढ़ते-चढ़ते क्या हाल हो जाएगा ? कड़ी धूप में जो काम कर रहे होते हैं उनको तो मानना ही पड़ेगा । थककर सोफे पर बैठ गए रामलाल । अपने छोटे हाथ में एक बड़ा गिलास लेकर दादा के सामने हाथ बढ़ाया शिवम । इतनी गर्मी में आपको बाहर जाना ही नहीं था, वह भी मुझे घर पर ही छोड़ कर । दादा, यह आपने अच्छा नहीं किया । आप मुझे साथ में लिए बिना अकेले घूम कर आए हैं ।

अरे बाबू इतनी गर्मी में मैं घूमने जाता ? मैं तो एक जरूरी काम से बाहर गया था । तुझे कैसे ले जाऊँ ? वैसे तुझे पढ़ने-लिखने का भी काम होता है । वह सब काम कौन करेगा ? बड़े प्यार से रामलाल ने उत्तर दिया ।

पढ़ना लिखना सब हो गया । दादू, आपको भी पता है कि मैं अपना सारा काम खुद कर लेता हूँ । फिलहाल मुझे कोई काम नहीं है । आप जो मुझे छोड़ कर गए, मैं दादी से पक्का शिकायत करूँगा । दादी ऐसे समझाएगी कि अगली बार आप मुझे छोड़कर कभी नहीं जाएँगे ।

पहले तुम मेरे पास आकर बैठो, शिकायत तुम बाद में कर लेना । अपने प्यारे पोते को अपने पास बिठा लिए रामलाल । पानी पीने के बाद थैली में से एक खिलौना निकालते हुए रामलाल ने कहा – यह लो थोड़ी देर खेल लेना, फिर दादी से जाकर शिकायत करना । खिलौना हाथ में लेते हुए हर्ष और उल्लास सहित शिवम ने कहा – वाह ! यह तो वही खिलौना है जिसे मैं कल पापा से माँगा था । थैंक यू दादू, अपने दादाजी को गले लगाते हुए सोफे से कूद कर खेलने गया शिवम । पोते की खुशी देखकर दादू का सारा थकान दूर हो गया ।

शाम को अपने हाथ में चाय का एक प्याला लेकर रामलाल से मिलने आया उसका बेटा विजय । चाय बढ़ाते हुए उसने अपने पिताजी से पूछा – आपको इतना कष्ट उठाने की क्या जरूरत थी ? अगर आप मुझसे कह देते तो मैं ही शाम को लेकर आ जाता । भगवान और आपकी कृपा से मैं आज एक बहुत बड़ा अफसर हूँ । जो चाहे खरीदने की शक्ति आज आपके कारण मुझ में भरपूर है ।

चाय का स्वाद लेते हुए रामलाल ने कहा – जब बेटा मुँह खोलकर कुछ खरीदने को कहता है तब उसकी बात को टालना एक पिताजी के हृदय को कितना दुख पहुँचाता है, मैं खूब जानता हूँ ।

पापा बात वह नहीं है । अपने द्वारा माँगी जानेवाली हर चीज़ मिल जाने पर किसी भी चीज़ का कदर बच्चों को कभी नहीं होता । आपने ही तो सिखाया है कि कभी–कभी ना कह कर बच्चों के हृदय में आत्म बल बढ़ाना भी जरूरी है । आपकी इसी रीती को मैं अपना रहा था । अपने बेटे को गर्व भरी नजर से देखते हुए चाय पीने लगे रामलाल । शिवम खुशी–खुशी खेल रहा था ।

लघुकथा

संतोष

– श्री. मेहेलकुना,
सुर्खेत, नेपाल

– प्रतिज्ञा प्रतिज्ञा

बहुत दुख झेलना पड़ा होगा, है न दादी माँ,

कपड़े धोने की मशीन की तरफ जाती दादी को उसने रोकते हुए पूछा ।

दादी माँ ने अतीत को याद करते हुए कहा,

हाँ बेटी, खाना–कपड़ा भी मुश्किल से मिलता था । बहुत मेहनत करनी पड़ती थी । आज जैसी सेवा–सुविधा कहाँ थी ? काम करते–करते शरीर ही घिस जाता था ।

पता नहीं, इंसान का मन भी समझ से परे है,

उसने झुँझलाते हुए कहा ।

क्या हुआ ?

दादी माँ ने आश्चर्य से देखते हुए पूछा ।

अब इतना सब आसान हो जाने पर भी लोग खुश क्यों नहीं दिखते, दादी माँ ?

उसने चिंतित स्वर में कहा ।

दादी माँ ने उसे प्यार से समझाते हुए कहा,

जब हम अपने कर्म से ज्यादा की आशा रखने लगते हैं बेटी, तो सुख भी बोझ–सा लगने लगता है ।

दूर–दूर तक सोचा करो कोई सीमा नहीं
पास अपने पास जो गरीब है ठहरें भूखा नहीं
अपने से जितना हो सके दान धर्म किया करो
कहता जेमि मानव बनकर तुम जिया करो ।।

दोस्ती

– श्री. उदय किशोर साह,
बाँका, बिहार

मित्र वही जो कृष्ण सुदामा का अक्स दिखाये
मित्र वही जो लक्ष्मण सा हो जीवन में आये
मित्र वही जो भरत जैसा त्याग हमें दिखलाये
मित्र वही जो बानर सुग्रीव हनुमत बन जाये

मित्र वही जो अपनापन जीवन में समझ आये
मित्र वही जो खून का रिश्ता-सा हमें जताये
मित्र वही जो राज दरबार में संग-संग जाये
मित्र वही जो अन्तिम संस्कार में भी आये

मित्र वही जो बैरी के बीच ढाल बन जाये
मित्र वही जो अभिमान गुमान ना दिखलाये
मित्र वही जो भाई का अनुराग बरसाये
मित्र वही जो दौलत की दीवार गिराये

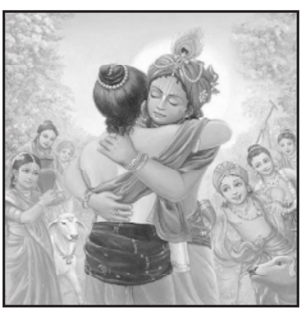

मित्र वही जो मैत्री में भेद भाव को ठुकराये
मित्र वही जो अमीरी गरीबी को भगाये
मित्र वही जो मुसीबत में सदैव काम आये
मित्र वही जो सांसों में बस को महकाये

मित्र वही जो सरस दिल दोस्ती में दिखाये
मित्र वही जो स्नेह प्रेम का भाव बहाये
मित्र वही जो बरबस परछाईं-सा बन जाये
मित्र वही जो जटायु बन मैत्री धर्म निभाये

अमर शहीद रामप्रसाद 'बिस्मिल'

जन्म:11 जून 1897, शाहजहाँपुर, उ.प्र. **बलिदान:**19 दिसंबर 1927, गोरखपुर जेल

रामप्रसाद 'बिस्मिल' क्रांतिकारी, शायर और 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के संस्थापक थे। 'बिस्मिल' का अर्थ 'घायल' है। 19 वर्ष की आयु में देश की आज़ादी के लिए सशस्त्र क्रांति का मार्ग चुना।

9 अगस्त 1925 को काकोरी में सरकारी खज़ाना लूटने की योजना के मुख्य सूत्रधार थे। उद्देश्य था अँग्रेजों के खिलाफ हथियार खरीदना। काकोरी कांड के मुकदमे में इन्हें अशफ़ाक़ उल्ला खाँ, रोशन सिंह और राजेंद्र लाहिड़ी के साथ फाँसी की सज़ा हुई।

फाँसी से एक दिन पहले माँ को लिखा – मैंने देश के लिए जीवन दिया है। रोना मत। यदि देश के लिए हज़ार जन्म भी लेने पड़ें, तो भी मैं तैयार हूँ। 19 दिसंबर 1927 को 'वंदे मातरम्' और 'भारत माता की जय' कहते हुए फाँसी पर चढ़ गए।

मन की लहर

न मुख से राम बगल में छूरी, न मुख पर हरि ओम
कहने को तो हिन्दू कहलाते, करते नहीं हैं कर्म
देश-द्रोहियों को धिक्कार है, धिक्कार है, धिक्कार है।

जो नर अपनी मातृभूमि का, गौरव भूल गया है
मातृभूमि के चरणों में जो, शीश नहीं झुकाता
उस नर को धिक्कार है, धिक्कार है, धिक्कार है।

जो नर अपने देश की खातिर, प्राण नहीं दे सकता
मातृभूमि के बंधन को जो, काट नहीं दे सकता
उस नर को धिक्कार है, धिक्कार है, धिक्कार है।

उठो जवानो देश के, अब सोने का वक्त नहीं
मातृभूमि पुकार रही है, खोने का वक्त नहीं
देश-द्रोहियों को धिक्कार है, धिक्कार है, धिक्कार है।

सरफ़रोशी की तमन्ना

सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है ज़ोर कितना बाज़ु-ए-क़ातिल में है ।
वक़्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ,
हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है ।
खैंच कर लाई है सब को क़त्ल होने की उम्मीद,
आशिकों का आज जमघट कूचा-ए-क़ातिल में है ।
ऐ शहीद-ए-मुल्क-ओ-मिल्लत मैं तेरे ऊपर निसार,
अब तेरी हिम्मत का चर्चा गैर की महफ़िल में है ।
है लिए हथियार दुश्मन ताक में बैठा उधर,
और हम तैयार हैं सीना लिए अपनों के दिल में है ।
हाथ जिन में हो जुनूँ कटते नही तलवार से,
सर जो उठ जाते हैं वो झुकते नहीं ललकार से ।
और भड़केगा जो शोला-सा हमारे दिल में है,
सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।

मेरा रंग दे बसंती चोला

मेरा रंग दे बसंती चोला, माए रंग दे बसंती चोला ।
इसी रंग में रंग के शिवा ने, माँ का बंधन खोला ।।
मेरा रंग दे बसंती चोला ।
इसी रंग में मीरा ने भी, गिरधर पिया को टोला ।
मेरा रंग दे बसंती चोला ।
इसी रंग में भगत सिंह तूने, जीवन सफल कर डाला ।
मेरा रंग दे बसंती चोला ।
इसी रंग को पहन-पहन कर, वीरों ने यश पाया ।
मेरा रंग दे बसंती चोला ।

लक्ष्य पूर्ण करके ही लौटो

– डॉ. त्रिलोकी सिंह,
प्रयागराज, उ.प्र.

जीवन–पथ के संघर्षों से, कभी नहीं घबराना ।
साहस और धैर्य धारण कर, आगे बढ़ते जाना ।।

शक्ति और साहस हो तो फिर,
कोई काम न रुकता ।
अवरोधों के सम्मुख डरकर,
कहाँ उद्यमी झुकता ?
विजय–पराजय होती रहती, यह है नियम पुराना ।
साहस और धैर्य धारण कर, आगे बढ़ते जाना ।। 1 ।।

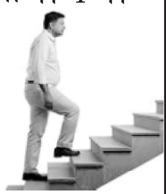

छोटी–बड़ी समस्याओं का,
डटकर करें सामना ।
कठिन परिश्रम से ही होती,
पूरी मन:कामना ।।
चिन्ता नहीं, वरन् चिन्तन से, हर गुत्थी सुलझाना ।
साहस और धैर्य धारण कर, आगे बढ़ते जाना ।। 2 ।।

दृढ़ संकल्प किया जिसने भी,
वही सफल हो पाया ।
उसने अपना सब कुछ खोया,
जिसने समय गँवाया ।।
नहीं कर सका कुछ भी, जिसने, काम किया मनमाना ।
साहस और धैर्य धारण कर, आगे बढ़ते जाना ।। 3 ।।

असफल हो जाओ फिर भी तुम,
हिम्मत कभी न हारो ।
बुद्धि–विवेक–शक्ति जागृत कर,
अपना भाग्य सँवारो ।।
अपने बलबूते ही अपना, भारी बोझ उठाना ।
साहस और धैर्य धारण कर, आगे बढ़ते जाना ।। 4 ।।

घेरे तिमिर निराशा का तो,
आशा–दीप जलाना ।
दुर्दिन में भी निज पाँवों को,
पीछे नहीं हटाना ।।
लक्ष्य पूर्ण करके ही लौटो, जो मन में है ठाना ।
साहस और धैर्य धारण कर, आगे बढ़ते जाना ।। 5 ।।

समय (मधु मालती छंद)

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

हर पल बड़ा, बलवान है, सबका समय, भगवान है ।
मेहनत से, मुस्कान है, सुंदर बने, दिनमान है ।।
हिम्मत कर, विश्वास रख, मेहनत का, परिणाम चख ।
रख हौसला, पाले विजय, कर साधना, हो दिग्विजय ।।
छू ले गगन, सपना सजा, श्रम गीत गा, बाजा बजा ।
सीढ़ी बना, विस्तार दे, नूतन सपन, आकार दे ।।
सम्मान कर, तू काल का, चलते समय, गतिमान का ।
थमता नहीं, डरना नहीं, बाधा कहीं, मुश्किल कहीं ।।
राही कदम, रखना सही, मंज़िल मिले, इच्छित वही ।
हर पल यहाँ, तो दौड़ है, सुख–दुख समय, का जोड़ है ।।
कमजोर क्यूँ, इतना बना, तू है निडर, उर को मना ।
होगी विजय, इस प्यास की, आत्मिक सुखद, विश्वास की ।।
जगती सदा, आशा वहीं, जो धैर्य को, छोड़े नहीं ।
तू समझ ले, इस बात को, पा सुखद–सी, सौगात को ।।
बीता समय, वापस कभी, आता नहीं, रोते सभी ।
मौका मिले, कल हाँ नहीं, चिंता सदा, रहती वहीं ।।
राहें बने, व्यहवार से, स्वीकृति सहज, स्वीकार से ।
आगे निकल, छोड़कर दुख, 'आनंद' भर, जीतकर सुख ।।
तू मत बिखर, कर प्यार कुछ, करता समय, ही कुछ न कुछ ।
भीतर जगा, उस चाह को, तू सीख जा, उस वाह को ।।
गतिमय समय, पल–पल घटे, खुश हो चला, संकट छटे ।
कीमत समझ, कर जो चलें, शुभ ही सदा, प्रतिफल मिलें ।।

श्री कृष्ण भजन

– डॉ. सत्येंद्र सिंह,
पुणे, महाराष्ट्र

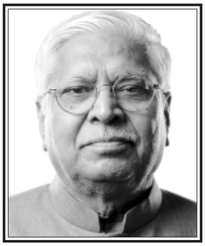

राधे–राधे बोल, मनवा राधे–राधे बोल,
कृष्ण नाम की महिमा सबसे है अनमोल ।

श्याम तेरी बंसी की मीठी ये तान है,
सुनके इसे झूमे सारा जहान है ।
राधा के मनमोहन, मुरलीधर घनश्याम,
तेरे चरणों में ही मेरा सम्मान है ।।

राधे–राधे बोल, मनवा राधे–राधे बोल,
कृष्ण नाम की महिमा सबसे है अनमोल ।।

यमुना किनारे तूने रास रचाया,
गोपियों के संग प्रेम दीप जलाया ।
माखन चुराकर हर लिया सबका मन,
भक्तों के जीवन को दिया खुशियों से भर ।।

राधे–राधे बोल, मनवा राधे–राधे बोल,
कृष्ण नाम की महिमा सबसे है अनमोल ।।

गीता का ज्ञान दिया अर्जुन को रण में,
सत्य की राह दिखाई जीवन के क्षण में ।
दीनों के सहारे, दुखियों के रखवाले,
तेरे बिना सूने सब मंदिर और शिवाले ।।

राधे–राधे बोल, मनवा राधे–राधे बोल,
कृष्ण नाम की महिमा सबसे है अनमोल ।।

मेरे भी जीवन में आओ नंदलाला,
भक्ति से भर दो ये मन की मधुशाला ।
तेरी कृपा से ही हर काम बनेगा,
नाम तेरा लेते ही जीवन सँवरेगा ।।

जय–जय श्री राधे, जय–जय श्री श्याम,
भक्तों के हृदय में बसते आठों याम ।।

सृष्टि की रचियता - माँ

– डॉ. पी.आर. वासुदेवन
शेष, चेन्नै, तमिलनाडु

जननी पद की शोभा तुम
इस सृष्टि की रचियता तुम
क्रांति की जलती मशाल तुम
मानव के प्रगति पथ की प्रदर्शक तुम ।।

पृथ्वी का श्रृंगार बनी तुम
सौंदर्य की आभा तुम
निविड़ निशा के अधँकार में
हर क्षण मुस्कुराती तुम ।।

दामन में हो कितने ही काँटे
फूलों सी महकती तुम
अनगिनत तपों की रानी
सबका साथ निभाती तुम ।।

कर्मशील अपनी संतान को बनाकर
इस उपलब्धि की प्रेरणा–स्त्रोत तुम
खुशहाल जीवन का गीत तुम्हीं से
नयी उमंग, ऊर्जा की दाता तुम ।।

असह पीड़ा का विषपान कर
अमृत पान कराती तुम
रिश्ते नातों की पहचान तुम्हीं से
ममत्व की सच्ची अनुभूति तुम ।।

जीजा माता, यशोदा
लक्ष्मीबाई, चैन्नमा वीरांगना तुम
मानवता और प्रेम–स्नेह की अनूठी
जीती जागती प्रमाण तुम ।।

तुम्हें करता है नमन हर विश्व का मानव
सृष्टि की सुंदर अनमोल रत्न तुम
माँ की गरिमा है सबसे न्यारी
सबसे प्यारी है माँ हमारी ।।

जून के सितारे

नीरज स्मृति

पूरा नाम : गोपालदास सक्सेना 'नीरज'
जन्म : 4 जून 1925, इटावा, उत्तर प्रदेश
निधन : 19 जुलाई 2018, दिल्ली
सम्मान : पद्म श्री 1991, पद्म भूषण 2007

जीवन-परिचय :

नीरज जी हिन्दी के सबसे लोकप्रिय गीतकार थे । बचपन गरीबी में बीता । इटावा के स्कूल में पढ़ाते-पढ़ाते कविता लिखने लगे । मेरठ कॉलेज में हिन्दी के प्रोफेसर रहे । मंच पर कविता पढ़ने का ऐसा अंदाज़ था कि हज़ारों की भीड़ झूम उठती थी ।

फिल्मों के लिए भी गीत लिखे - 'कारवाँ गुजर गया', 'शोखियों में घोला जाए', 'ए भाई ज़रा देख के चलो' । कहते थे - कविता वही जो आम आदमी के दिल तक पहुँचे ।

प्रसिद्ध अंश - शिक्षा के लिए :

कारवाँ गुजर गया, गुबार देखते रहे
हम खड़े-खड़े वहाँ, मजार देखते रहे
हम तो अपनी साँसों की सरगम पर जिए
दर्द को भी हमने अपनागीत बना लिया

नीरज का काव्य-संसार

1. कविता की खासियत :

नीरज के गीतों में प्रेम, विरह, उम्मीद और दर्शन एक साथ मिलते हैं । उर्दू-हिंदी का ऐसा मेल कि पढ़ते ही ज़ुबान पर चढ़ जाए । कठिन शब्द नहीं, दिल की बात सीधी-सादी ।

2. मुख्य विषय :

- जीवन का संघर्ष: हार कर भी मुस्कुराना सिखाते हैं
- प्रेम: राधा-कृष्ण से लेकर आम इंसान तक
- आशावाद: दीप से दीप जले का संदेश

3. बच्चों के लिए संदेश :

नीरज कहते थे - स्वप्न झरे फूल से, मीत चुभे शूल से, फिर भी आगे बढ़ना है । असफलता से मत डरो ।

4. प्रमुख गीत-संग्रह :

गीत-अगीत, दर्द दिया है, कारवाँ गुजर गया, बादलों से सलाम लेता हूँ

5. प्रसिद्ध गीतों की सूची :

1. कारवाँ गुजर गया	2. लिखे जो खत तुझे
3. रंग दे तू मोहे गेरुआ	4. शोखियों में घोला जाए
5. इतने बदनाम हुए हम	6. खिलते हैं गुल यहाँ
7. आज मदहोश हुआ जाए रे	8. दिल आज शायर है

सफर

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन,
मुज़फ्फ़रनगर, उ.प्र.

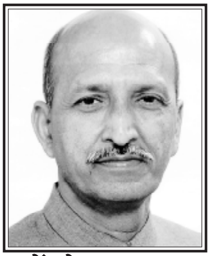

जब रातों में नींद न आये, ख्वाब दूर खुद से हो जाये,
करवट बदलें बिस्तर पर, सूनापन मन में छा जाये ।
तलाश बढे मन के भीतर, क्या खोया तलाश रहे जो,
जोड़ रहे हैं तार पुराने, शायद रिश्ता कायम हो जाये ।

नहीं जुड़ा जब रिश्ता कोई, भूली बिसरी यादों से,
सुख–दुख का किस्सा कोई, याद न आया यादों से ।
उठ कर बैठे बिस्तर पर, मोबाइल को खोल लिया,
बस देखते रहे व्यर्थ ही, कुछ लिख न पाये यादों से ।

विचार मचलते लहरों जैसे, वो तट पर टिक पाये ना,
लहरें आती यादें लेकर, यादें तट पर टिक पाये ना ।
कभी–कभी मन के आँगन, यादें सोन चिरैया जैसी,
खूब फुदकती गीत सुनाती, मन आँगन टिक पाये ना ।

कोरा कागज कलम हाथ में, विचारों का मंथन जारी,
आज लिखेंगे सफ़र याद का, शब्द संयोजन तैयारी ।
मन के अन्दर मचल रहे थे, उतर सके न कागज पर,
भावों की वैतरणी सम्मुख, बीच भँवर डूब डर भारी ।

मन तो बना

– श्री. मनोहर सिंह चौहान मधुकर,
जावरा, रतलाम, म.प्र.

हसे खेले ऐसा सुंदर चमन तो बना ।
दिल खोलकर उड़े ऐसा गगन तो बना ।।
बहुत दिन हुए मीत तुझ से हमें बिछड़े हुए,
मनोहर फिर से मिलन का मन तो बना ।।

क्यों रहता है मीतवा तू इतना तना ।
मेने तो किया है तुझ से प्रेम घना ।।
तोड़ दुनियाँ के सारे रस्मों रिवाज,
मनोहर फिर से मिलन का मन तो बना ।।

इस जीवन की कोई मंजिल तो बना ।
आजा प्रिय तू तोड़ कर अपनी अना ।।
बिना मिले हम फना हो अच्छा नहीं,
मनोहर फिर से मिलन का मन तो बना ।।

लोकतंत्र की आहुति...!

– श्री. संजय एम. तराणेकर,
इन्दौर, म.प्र.

चुनाव में कोई हारा है और कोई है जीता,
लोकतंत्र की आहुति में योगदान दे सीखा ।
झालमुड़ी का ‘करिश्मा’ नहीं रहा हैं फीका,
खाई किस-किसने, लगे किसी को तीखा ।

यहाँ हर कदम पर ‘भय’ का था वातावरण,
महिलाओं ने बेधड़क किया मतदान वरण ।
जिसने दिया भयमुक्त करने का आश्वासन,
वहीं पाएगा कुर्सी, राज्य में अपना शासन ।

यूँ जनता ने अपना भी फैसला लिख दिया,
निराश न जाने किस-किसको कहाँ किया ।
किसी के नेतृत्व ने हारने का रेकार्ड बनाया,
विजय देखो ‘वन टाइम’ इतिहास लिखाया ।

यहाँ पे निराश मैंने किसी को भी नहीं किया,
हिमंता को पुनः विकास का जिम्मा दे दिया ।
विपक्षी को प्रसाद में केरलम ‘उपहार’ दिया,
वोट की ताकत ने रंग दिखा सबको रिझाया ।

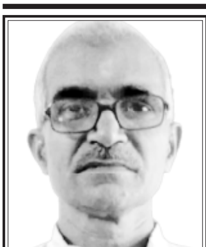

परी की बिल्ली

– डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय,
प्रयागराज, उ.प्र.

परी ने पाली भूरी बिल्ली
वह थी बहुत शेखचिल्ली

आगे पीछे घूमा करती थी
विस्तर गीला कर देती थी

कभी गोद में बैठा करती
दूध कभी पूरा पी जाती

परी खेलती उससे दिन में
कभी रूठ जाती है छिन में

मम्मी जब दोनों को दुलराती
तब दोनों ही खुश हो जाती

बंगाल

– श्री. राकेश कुमार,
फतेहपुर, उ.प्र.

आज बंगाल मुक्त हो चुका, निर्ममता के अत्याचारों से,
आसाम भी अब खाली होगा, घुसपैठियों गद्दारों से,
हिन्दु स्वर अब मुक्त हो रहा, जातिवाद के दरारों से,
सत्तालोभी ताक में बैठे, बडा प्रेम है जेहादी यारों से,
चाहें कैसे खंडित कर दें, हिन्दू एकता, कुछ जहरीले नारों से,
भोजशाला अब मुक्त हो चुकी, मजहबी अत्याचारों से,
इस सुख का भी वो शोक मनाते, अपने दुःखी उद्गारों से,
वोट बैंक का लोभ प्रबल है, विलग है, सनातन संस्कारों से,
कोई ऐतराज इन्हें नहीं होता, खालिद, शरजीलों के नारों से,
कन्हैया जैसों को गले लगाते, करें दोस्ती मक्कारों से,
मोदी इनको तनिक नहीं भाते, है बड़ा प्रेम गद्दारों से,
देश प्रगति पर हाहाकार मचाते, साथ मिल इंडी के यारों से,
काशी, मथुरा का स्वर अप्रिय लगता, दबे वक्फ के इशारों से,
शातिरों की तरह वे हर सच को नकारें, जलते स्वयं अंगारों से,

पाँच दोहे

माँ को समर्पित

– श्री. कृष्ण कुमार निर्माण, करनाल, हरियाणा

माँ ममता का रूप है, माँ है सकल जहान ।
माँ कल्पवृक्ष की छाया, माँ होती भगवान ।।

*****

माँ से जन्में धरा पर, पीर फकीर महान ।
माँ से कायम जगत है, माँ से है भगवान ।।

*****

माँ ममता की मूरत, सकल गुणों की खान ।
माँ गीता का संदेश, माँ बाइबल कुरान ।।

*****

माँ ईश्वर का रूप है, माँ ही पीर फकीर ।
सच है बस इतना सही, माँ लिखती तकदीर ।।

*****

कुछ नाहीं रे माँ बिना, माँ बिन घोर अंधार ।
प्रथम गुरु भी माँ है, माँ जीवन आधार ।।

*****

हिन्दी

– श्री. पवन कुमार भारतीय,
मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

हिय में हिन्दी उतर गई गर, मन प्रफुल्लित कर देगी ।
अनजान बने गर हिन्दी से, क्या राष्ट्र भक्ति पूरी होगी ?
राष्ट्र प्रेम, सौहार्द दिलों में हिन्दी ने जगा दिया ।
अँग्रेजों की करतूतों को जन–जन तक पहुँचा दिया ।।
हिन्दी बनी हथियार हमारी, अँग्रेजों से जंग लड़ी ।
जोड़ दिया पूरे भारत को बिखरा था जो कड़ी–कड़ी ।।
जिसने हमको स्वतंत्र किया उस भाषा का सम्मान करें ।
विश्व में तीसरी बड़ी भाषा है, इस पर हम अभिमान करें ।।
तीसरी से पहली बनेगी, गर हमने दिल में ठान लिया ।
विश्व यथार्थ कुटुम्ब बनेगा यदि हिन्दी को सम्मान दिया ।।
मंदारिन, अँग्रेज़ी की लिपि, निज ध्वनि को न साथ दिया ।
अर्थ, अनर्थ हो जाता अक्सर, वर्णों का परिहास हुआ ।।
हिन्दी ने हर बोली, भाषा, अपने संग साध लिया ।
क्यों हम दूर रहे हिन्दी से जिसने
हमको मान दिया ।।

हे प्रेम वाहिनी...

– श्री. मनोज शाह 'मानस',
नई दिल्ली

हे प्रेमांजलि...!
हे प्रेम प्रवाहिनी...!!
हे प्रेम प्रवासिनी...!
हे प्रेम निवासिनी...!!
तुम ही लेकर जाने के बाद
यह हृदय पत्थर बन गया...
इसके बाद...,
तुम्हारी यादों के हथौड़े से
पीट पीटकर...
मैं मूर्ति बन गया...
तुम्हारे द्वारा ही तोड़ने के बाद
मेरे सपने इधर–उधर
बिखरकर अनाथ हुआ...
उसके बाद...,
प्यार की परिभाषा पढ़कर
निराशा की आँसू बहाकर
जो बूँद गिरे..., उन्हीं बुँदों से
मैं मोती बन गया...
तुम मुझे
छोड़कर जाने के बाद...
चाहत शून्य होने के बाद...
तुम्हारे घात द्वारा
रेत रेतकर...,
मैं एक मधुर धुन बन गया...!

लोकतंत्र

– श्री. विमल कुमार,
पूर्णियाँ, बिहार

जो बनाए संविधान, होगा नहीं अनुमान,
नेता का घटिया सोच, स्वहित बढ़ेगी चाह !
करती जनता का काम, मिले नहीं सुखधाम,
लिपटे रहे स्वार्थ में, सुनते नहीं कराह !!

अनेकता में एकता, बनी रहे समानता,
भेदभाव मिटे सभी, बने हो पहरेदार ।
हो दीन मेधा उत्थान, बनाना ऐसा विधान,
बचे लाज संविधान, हो न देश शर्मसार ।।

कहें सभी लोकतंत्र, हमें दिखे राजतंत्र,
डाले फूट समाज में, फले-फूले वंशतंत्र !
माने नहीं हठधर्मी, रहते साथ विधर्मी,
करते रहें हुंकार, शहीदों का मूलमंत्र !!

तुझको दीपक ही बनना है

– डॉ. अलका अग्रवाल, जयपुर, राजस्थान

जो राह चुनी तुमने उस पर
पथ में हैं कांटे बिछे हुए ।

छाया है तम ही तम चहुँ दिशि,
हर दिवस हुआ ऐसा ज्यों निशि ।

कोई रवि किरण नहीं दिखती,
कोई भी साथ नहीं देता ।

पर इससे क्या बाधाएँ मिल,
पथ रोक सकेंगी तेरा क्या ?

तुझको दीपक ही बनना है,
निशि दिन ऐसे ही जलना है ।

थमने का नाम नहीं लेना,
पल प्रति पल आगे बढ़ाना है ।

पिता की रौशनी

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

हाँ बेटा, मैं तुझे अंधेरे से बचाना चाहता हूँ,
जीवन के कुछ मूल सूत्र समझाना चाहता हूँ ।
ये सही है, मेरा बार–बार टोकना
तुझे शायद अच्छा नहीं लगता,
मुझसे खुलकर बात करने का मन
अक्सर ही कतराता, भटकता ।
मेरी डाँट, मेरे शब्द
तुझे जैसे चाकू–छुरा लगते हैं,
पर इन्हीं में छुपे भाव मेरे
तेरे भविष्य के रक्षक बनते हैं ।
तू क्यों नहीं समझ पाता है
इन बातों की गहराई को,
बात पूरी सुने बिना ही
छोड़ देता है सच्चाई को ।
जल्दबाज़ी छोड़, धैर्य का ताप सहना सीख,
अपने पैरों पर चलना, खुद को गढ़ना सीख ।
हर एक फरमाइश के पीछे
कितनी मेहनत झेल रहा कोई,
अपनी ही ज़िंदगी, अपने ही तन से
कितना खेल रहा कोई ।
वक़्त किसी के लिए नहीं ठहरता,
ये सच्चाई याद रखना,
जो पसीने से खेलते हैं
उनके पाँव में छाले भी हार मानते ये बात समझना ।
सूरज ढलता है तो
नई सुबह का उजाला लाता है,
पर पिता जब ढल जाता है,
तो जीवन अंधकार ही पाता है ।
इसलिए, अभी भी समय है–
पिता की छाँव का मान कर लो,
कहीं देर न हो जाए,
उनके होने का सम्मान कर लो ।

अविभाज्य

– डॉ. हीरेन्द्रकुमार भागवती,
गुवाहाटी, असम

नदी सागर की ओर बढ़ती है–
फिर भी सागर किनारा नहीं तोड़ता ।
शिखा जलती है–
फिर भी अग्नि से अलग नहीं होती ।
श्वास–प्रश्वास अनवरत चलते हैं–
फिर भी वायु छल नहीं करती ।
तुम भी जीवित हो–
फिर भी तुम्हारा मन अस्त–व्यस्त ।
अहं ब्रह्मास्मि–
यही सत्य है ।

नयनों में वही समाया है । जिसने संसार रचाया है ।।

– श्री. विनय सागऱ जायसवाल,
बरेली, उ.प्र.

टूटे है भ्रम के राजमहल
हैं सुस्मृतियों में चरण कमल ।
छूकर जीवन भी हुआ विमल
हर अंधकार घबराया है
नयनों में वही समाया है
जिसने संसार रचाया है ।।

स्वाँसो ने कितने किये भजन
आंलिगन करती सुरभि पवन
हर क्षण होता है महामिलन
फिर नवप्रभात मुस्काया है ।।
नयनों में वही समाया है
जिसने संसार रचाया है ।

यह मुझको भी अनुमान नहीं
है कहाँ–कहाँ अनुदान नहीं
इस प्रश्व से अब व्यवधान नहीं
क्या खोया है क्या पाया है ।।
नयनों में वही समाया है ।
जिसने संसार रचाया है ।

है नाव फँसी भवसागर में
जो बैठा है उर–गागर में
है आस उसी नटनागर में
उसने ही सदा बचाया है ।।
नयनों में वही समाया है
जिसने संसार रचाया है ।

हर प्रश्न अधूरा–पौन यहाँ
बैठा है छुप कर कौन यहाँ
हर आहट भी है मौन यहाँ
यह किस अनन्त की छाया है ।।
नयनों में वही समाया है
जिसने संसार रचाया है

यह कैसी प्रेम–पिपासा थी
हर आशा बनी निराशा थी
फिर भी मन में जिज्ञासा थी
क्या उस विराट की माया है ।।
नयनों में वही समाया है
जिसने संसार रचाया है ।

सागऱ है इतनी सच्चाई
जब आशा ने ली अंगडाई
हर ओर खड़ी थी तन्हाई
जीता मन भी पछताया है ।।
नयनों में वही समाया है
जिसने संसार रचाया है ।

சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான்

சபரி பேலஸ், 193, இரண்டாவது அக்ரஹாரம்,
சேலம்-636001. & 0427-4265414 0427-4552100
Website : https://shabari.in

வாணி விகாஸ் – ஓர் பார்வை .....

உங்களின் கேள்விகளுக்கு இதோ எங்கள் பதில்கள் .....

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்குரிய விண்ணப்பப் படிவங்கள் சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானின் உறுப்பினர்களுக்கு மட்டுமே வழங்கப்படும். வருடாந்திர உறுப்பினர் கட்டணம் ரூ.100/-

வாணி விகாஸ் தேர்வு எதற்காக நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் என்பதின் பொருளிலேயே இந்த வினாவிற்கான விடை இருக்கிறது. ஹிந்தி பேசத் தெரியாதவர்களை ஹிந்தியில் பேசவைப்பதே வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நோக்கமாகும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தானால் நடத்தப்படுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு வாய்மொழித்தேர்வா அல்லது எழுத்துத்தேர்வா ?

பேச்சாற்றலை வளர்ப்பதே வாணி விகாஸின் கொள்கையாகும், எழுதுகின்ற வேலை இதில் கிடையாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான குறைந்தபட்ச வயது என்ன ?

எட்டு (8) வயது பூர்த்தியடைந்த அனைவரும் வாணி விகாஸ் தேர்வில் பங்கேற்கலாம். வாணி விகாஸ் தேர்வின் முதல் நிலை தேர்வில் பங்கேற்பவர்கள் விண்ணப்பத்துடன் தங்கள் பிறப்பு சான்றிதழ் நகலினை கட்டாயம் இணைக்க வேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கான அடிப்படை கல்வித் தகுதி என்ன ?

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கென அடிப்படைக் கல்வித் தகுதி ஏதும் தேவை இல்லை.

வாணி விகாஸ் தேர்வு எந்தெந்த மாதங்களில் நடைபெறுகிறது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வு ஜனவரி, ஏப்ரல், ஜூலை மற்றும் அக்டோபர் மாதங்களில் நடைபெறுகிறது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள் எத்தனை நிலைகளைக் கொண்டது ?

வாணி விகாஸ் தேர்வானது எட்டு நிலைகள் கொண்டது.

வாணி விகாஸ் தேர்விற்கு தனியான பாடப்புத்தகம் உள்ளதா ?

வாணி விகாஸ் எட்டு நிலைகளுக்கும் தனித்தனியே பாட புத்தகங்கள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியுமா ?

ஆம். வாணி விகாஸ் தேர்வில் ஒவ்வொரு நிலையாகத் தான் பங்கு பெற முடியும். ஒரே சமயத்தில் இரண்டு நிலைகளுக்கு விண்ணப்பிக்க இயலாது. நேரடியாக இரண்டாவது அல்லது அதற்கு அடுத்த நிலைக்கோ விண்ணப்பிக்க இயலாது. இரண்டாவது நிலையிலிருந்து எட்டாவது நிலை வரை விண்ணப்பிப்பவர்கள் தாங்கள் தேர்ச்சி பெற்ற முந்தைய நிலையின் 10 இலக்க தேர்வு எண்ணை (10 Digit Exam Register Number) தேர்வு விண்ணப்பத்தில் தெளிவாக எழுதி அனுப்பவேண்டும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மையங்கள் எங்கெங்கு உள்ளன என்று தெரிந்து கொள்ளலாமா ?

வாணி விகாஸ் தேர்வில் குறைந்தது 30 மாணவர்கள் இருந்தால் உங்கள் இடத்திலேயே தேர்வு மையம் அமைக்கப்படும். அதற்கும் குறைவாக 10 முதல் 29 வரை உள்ள நிலையில் தேர்வுமையக் கட்டணமாக ரூ.500 செலுத்த வேண்டும். **அவ்வாறான நிலையில் மற்றவர்களிடம் பயிலும் ஒரு சில மாணவர்கள் எவ்வித முன்னறிவிப்பின்றி தங்கள் தேர்வு மையத்தில் பங்கேற்பார்கள்.** தேர்வுமையக் கட்டணத்தை எக்காரணத்தைக் கொண்டும் திருப்பித் தர இயலாது.

வாணி விகாஸ் தேர்வுக்கு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் சான்றிதழ் உள்ளதா ?

ஆம், உள்ளது. வாணி விகாஸ் தேர்வு முடிந்து 30 நாட்களுக்குள் தேர்வு மதிப்பெண் பட்டியல் மற்றும் 60 நாட்களுக்குள் சான்றிதழ் அனுப்பி வைக்கப்படும். தேர்வு முடிவுகள் https://shabari.in-ல் வெளியிடப்படும்.

வாணி விகாஸ் தேர்வு யாரால் நடத்தப்படும் ?

சபரியால் தேர்ந்தெடுக்கப்பட்ட அனுபவமிக்க ஆசிரியர்களால் தேர்வு நடத்தப்படும்.

இத்தேர்வுக்கான மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளதா ?

பாட புத்தகத்தின் கடைசிப்பக்கத்தில் மாதிரி வினாத்தாள் உள்ளது.

வாணி விகாஸ் தேர்வு மாணவர்களுக்கு பயனுள்ளதா ?

ஹிந்தியின் இமாலய வளர்ச்சி மற்றும் பயனுள்ள பயிற்சியில் மாணவர்கள் நிச்சயம் பலன் பெறுவர்.

புத்தகக் கட்டண விவரம் :

புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை	புத்தகத்தின் பெயர்	தொகை
வாணி விகாஸ் நிலை-1	₹ 250.00	வாணி விகாஸ் நிலை-5	₹ 290.00
வாணி விகாஸ் நிலை-2	₹ 260.00	வாணி விகாஸ் நிலை-6	₹ 300.00
வாணி விகாஸ் நிலை-3	₹ 270.00	வாணி விகாஸ் நிலை-7	₹ 310.00
வாணி விகாஸ் நிலை-4	₹ 280.00	வாணி விகாஸ் நிலை-8	₹ 320.00

புத்தகக் கட்டணம் செலுத்துவது எப்படி ?

புத்தகக் கட்டணத்தை https://shabari.in என்கிற எங்களது இணையதளத்தின் வாயிலாக மட்டுமே செலுத்தவும்.

வாணிவிகாஸ் தேர்வுகளுக்கு (ஜனவரி [அ] ஏப்ரல் [அ] ஜூலை [அ] அக்டோபர் மாதங்களுக்கான தேர்வுகளுக்கு) குறைந்தபட்சம் ஒரு முகவரி (சபரி IDயில்) 10 மாணவர்கள் இருந்தால் மட்டுமே விண்ணப்பங்கள் ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

कूटरुव नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

तिरूकलंदै नाम था नगर उसका तमिलनाडु का
वहाँ का एक छोटा राजा रहे कूटरुव नायनार
शक्ति में बने रहे वीर शोर महान पराक्रमी
भक्ति में बने रहे महादेव शिव शंकर की अनुयाई
हर हर शिव शिव कहते रहते हर पल शिव का नाम भजते
हर काम के पहले महादेव परमेश्वर का नाम नित्य जपते
शिव भक्तों की सेवा संपूर्ण मन से करते रहते
हर शिव भक्त का मान सम्मान पूर्ण मन से करते ।

तीर तलवार चलाना बहुत ही अच्छा लगता था
वैरी उनके सामने अपना सुध बुध खो बैठता था
हर हर महादेव कहते जब यह तलवार चलाते थे
राजा महाराजा की सेना भी सामने से भाग जाते थे
सामना करना बहुत ही भयावना ठहरता था
शत्रु के सामने यह उनका महा काल लगते थे
कूटरुव शब्द का मतलब है यमराज
शत्रु को यह हमेशा लगते थे यमराज ।

तमिलनाडु के थे तीन महाबली महाराज राज करते
चेर चोल पांडिय राजा करते थे राज दूर दूर तक
तीनों को हराकर अपने आप को वीर साबित किये
तीनों राज्यों पर अपना शासन फैला कर राज किए

एक छोटा प्रांत के राजा अब राजाओं के राजा बने
रुकी नहीं विजय यात्रा वह तो बनी रही अब भी
भक्ति तो बढ़ती रही मन में एक इच्छा उत्पन्न हुई
मनी मुकुट धरना था चोल साम्राज्य के ब्राह्मणों से ।

चिदंबरम में रहते हैं महादेव नटराज के रूप में
छोड़ राजा मणि मुकुट धरते थे यहाँ के ब्राह्मण के हाथ से
रहा नहीं गया जब अपनी इच्छा की करनी थी पूर्ति
राजा कूटरुव नायनार निकल गए पहुँच गए चिदंबरम
मिल लिए थे वहाँ के ब्राह्मण से कह गए अपनी इच्छा
डर गए यह कार्य अपनाने से वहाँ के ब्राह्मण सदमे
सालों से करते आ रहे थे छोड़ मुकुट की रक्षा
उन्हीं की करते थे सेवा मणि मुकुट पहनाकर सदा ।

राजा की आज्ञा को ठुकरा दिए थे बहुत ही बलपूर्वक
मन ही मन डर गए चेर राज्य पहुँच गए एक परिवार को छोड़कर
दुख तब भरने लगा मन में जब हुई इच्छा की अपूर्ति
हाथ जोड़ने लगे नटराज के सामने अपने चरण को मनी मुकुट बनाने
सपने में आए महादेव महा कृपा बरसे अपने चरण दिए
मन खिल गया था महान जीत अपना लिया था
राज्य करने लगे शिव के नाम मन में सदा भजते भजाते
शिव मंदिर में राज्य भरके शिव मंदिर में सेवा करते ।

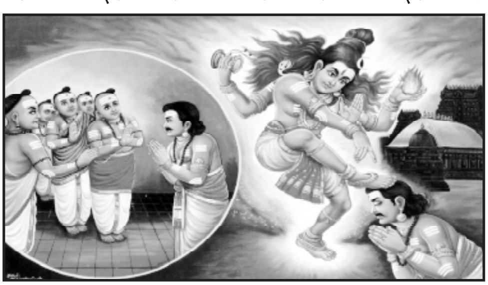

शिव नाम भजते रहते,
कूटरुव नायनार ।
शिव मंदिर की रक्षा कर,
मुक्ति पा बने अमर ।।

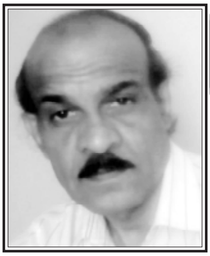

ग़ज़लें

– श्री. नवीन
माथुर पंचोली,
अमझेरा, धार, म.प्र.

– 1 –

इसने, उसने, सबने मारा ।
फिर भी ज़िंदा है बेचारा ।
हमसे अपनी बातें कहकर,
उसने दिल का बोझ उतारा ।
सपने उसके जैसे सबके,
लेकिन वो किस्मत हारा ।
फुटपाथों पर बीता उसका,
सोए–जागे जीवन सारा ।
श्रमजीवी, मजदूर हमेशा,
जीता है जैसे बंजारा ।
रोज़ कमाता, रोज़ चुकाता,
करता है यूँ वक़्त गुज़ारा ।
भूख, ग़रीबी साथी उसके,
जिसका दोषी देश हमारा ।

– 2 –

अना देखी नहीं जाती ।
फ़ना रोकी नहीं जाती ।
बयाँ भी कर नहीं सकते,
जुबाँ भी सी नहीं जाती ।
करें हम लाख कोशिश पर,
लगी दिल की नहीं जाती ।
सभी कुछ पा लिया लेकिन,
कमी अपनी नहीं जाती ।
गमों की भीड़ में अक्सर,
खुशी बाँटी नहीं जाती ।
किसी से राज़ की बातें,
सभी पूछी नहीं जाती ।

भानु नित्य भोर में

(महाशिव छंद)

– डॉ. अर्जुन गुप्ता 'गुंजन',
प्रयागराज, उ.प्र.

भानु नित्य भोर में रश्मियाँ प्रसारता ।
भृंग बाग में सदा धुन मधुर सँवारता ।।
पेड़ नित्य झूमते बाँह नित पसारते ।
पुष्प बाग में सदा रंग को निखारते ।।

कोकिला सुना रही तान नित सुहावनी ।
धुन मधुर निकालतीं पक्षियाँ लुभावनी ।।
कुञ्ज की गली सदा कृष्ण धुन सुना रही ।
कृष्ण संग राधिका गीत गुनगुना रही ।।

ग्वाल बाल संग में कृष्ण खेलते सदा ।
रास वे रचा रहे कुञ्ज बाग सर्वदा ।।
गोपियाँ सुहावनी नित्य हैं बुला रहीं ।
मोहनी लुभावनी गीत गा सुला रहीं ।।

गौरैया का आर्तनाद

– डॉ. यशोधरा भटनागर,
देवास, म.प्र.

सुनो
मैं वही हूँ, गौरैया
जो कभी
तुम्हारे आँगन में चहकती थी
नीम की शाखों पर झूलती
मिट्टी में नहा महकती थी
और तुम्हारी हँसी के संग
गीत मधुर बुनती थी
पर अब...
अब वो आँगन नहीं
वृक्ष नहीं, वृक्षों की छाँह नहीं
केवल पत्थर
पत्थरों की ठंडी चुप्पियों में
मेरा घोंसला धीरे-धीरे दम तोड़ता है
मैं उड़ती हूँ खोज में
तिनकों की, दानों की
पर चारों ओर
कंकरीट के जंगल है
जहाँ हवा भी ठहरी हुई है
और धूप भी बेजान-बेबस है
क्या तुम्हें याद है वह दोपहरी
जब तुमने अपनी मुट्ठी में
मेरे लिए धान भरे थे
और मैं चाहती थी चहकना
पर मेरी चहचहाहट से पहले
मोबाइल टॉवर्स की तरंगें
मुझे बहरा कर देती हैं
मैं पूछती हूँ तुमसे
क्या मेरा आँगन लौटेगा ?
क्या वह नीम फिर लहलहाएगा ?
क्या मिट्टी फिर से
मुझे अपने गीत सुनाएगी ?
या फिर
मैं भी एक भूली हुई
कहानी बन समा जाऊँगी
तुम्हारी यादों की
किसी धूल भरी किताब में ?

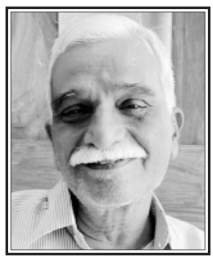

अंतिम फैसला

– श्री. पुष्करराय जोषी, राजकोट,
गुजरात

जीवन और मरण,
मरुस्थल और हिरन,
ऐसे उदाहरण देकर कवियों ने
भर दी किताबें,
अब क्या लिखे कलम ?
पुराने जख्मों को उड़ेलकर
भरे जख्मों पर मलहम ?
वासनाकी विकृति,
बिन आत्मा की खोखली आकृति,
चूके कुछ भी ठोस कदम उठाना,
तबतक तो आ गया
लो अंतिम फैसला !

जीवन निर्माण

– श्री. राजकुमार जैन राजन,
चित्तौड़गढ़, राज.

जाने कितने लोग हैं
जो बस जी रहे हैं
निर्वासितों की तरह
उन्हें जानने–पहचानने की
जरूरत किसी को नहीं
जिन्हें नहीं मालूम कि
वे क्यों जी रहे हैं ?
जिन्हें न अपने मौलिक अधिकारों
और कर्तव्यों का पता है
न संविधान की जीवट
प्रस्तावना का ?
सुप्त संवेदनाओं और
कुपोषण से
उनका तन–मन जर्जर हो
हड्डियों का ढांचा बन गया है
देह से निकलने वाली गन्ध
छीन रही है अनवरत
धरती का सुख–चैन
वे जी नहीं रहे
महज काट रहे हैं जीवन
जीवन – जो अभिशाप बन
घटित होता है धीरे–धीरे
पता नहीं जीवन–क्रम
कब टूट जाये
इससे पहले उनके सिरहाने
कुछ ख्वाब रखने होंगे
जगानी होगी कुछ उम्मीदें
देकर उनको सृजनात्मक दृष्टि
जीवन का मूल्य बताना होगा
शून्य में पैदा होगा तब संवेदन
होगी खुद से खुद की तलाश
मौन पड़े जीवन की कुटिया में
मुस्करायेंगे बोधि–वृक्ष
सब मिल जब सीखेंगे
होगा तब निर्माण जीवन का !

विधाता छंद

शिव वंदन

– श्री. संजय शर्मा, आगरा, उ.प्र.

सकल यह सृष्टि शिवमय है,
सभी शिव में समाया है ।
निकलकर दृश्य हर शिव से,
जगत में आज आया है ।।

बने जीवन सुखद उसका,
जिसे शिव प्यार हो जाए ।
महा सुख भोग कर जग से,
कि बेड़ा पार हो जाए ।।

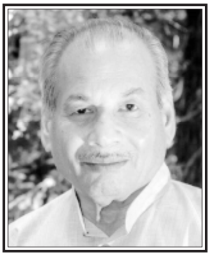

अनुभव और उद्गार बहुमूल्य हैं

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

जीवन के अनुभव से सीख मिली,
मेरी कमियों ने नापसंद करवाया,
उससे ज़्यादा नापसंद वो करते हैं,
मेरी खूबियों ने जिनको दूर किया ।

पैर से काँटे निकलने के बाद जो
आनन्द पैदल चलने में आता है,
वही आनंद अहंकार बोझ खत्म
होने से मानव जीवन में आता है ।

आरंभ तो किया रहस्य के साथ,
पर रहस्य अंत तक चलता रहा,
पर्त दर पर्त तब भी खुलती रही,
जो बचा वह है भावनाओं भरा ।

धन्यवाद करता हूँ आप सबका,
सादर आभार भी अब आपका,
कविता रचना तो एक बहाना है,
भावाभिव्यक्ति व्यक्त करने का ।

अनुभव और उद्गार बहुमूल्य है,
इनकी अभिव्यक्ति का महत्व है,
शब्दों में व्यक्त या भाव भंगिमा से,
आदित्य अव्यक्त व्यक्त हो स्नेह से ।

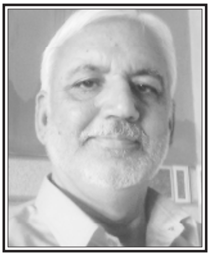

गीत

– श्री. राजपाल सिंह गुलिया,
झज्जर, हरियाणा

मुखिया ने जो बात कही है,
लगता सबको यही सही है ।

जल में रहकर मगरमच्छ से,
होता ये अच्छा बैर नहीं ।
बकरे की माँ इस स्थिति में तो,
बिलकुल भी माँगे ख़ैर नहीं ।
गया साँप-सा सूँघ सभी को,
सबके मुँह में जमी दही है ।

बिन शर्त के समर्थन देना,
सीख गई अब मूरख जनता ।
आँख मूँद जो सही करे बस,
मुखिया उन पंचों को गिनता ।
लेखनहार हुए अब उनके,
जिनके हाथों आज बही है ।

मुँह देखे की प्रीत जताएँ,
कहें बात भी ठकुरसुहाती ।
लाज बेचकर आयीं आँखें,
चौपालों में खड़ी लजाती ।
अंधा बाँटे यहाँ रेवड़ी,
अंधी दुनिया देख रही है ।

पलते ब्रह्मांड उसमें

– श्री. निलेश जोशी 'विनायका',
पाली, राजस्थान

जिनके कदमों की आहट रुलाती रही
जिनकी लोरी कहानी सुलाती रही
जिसके पैरों की पायल बुलाती रही
अपने सीने का अमृत पिलाती रही
जो हाथों से हमको खिलाती रही
जब भी भूखे थे भोजन दिलाती रही
सबकी नजरों से मुझको बचाती रही
टीका काला वह मुझको लगाती रही
गा के लोरी वो निंदिया बुलाती रही
मेरे माथे पर बिंदिया लुभाती रही
सुखी या दुखी हो सदा हंसाती
हर घड़ी सूखे में मुझको सुलाती
अपने अरमान दिल में दबाती रही
मेरे सपने नये नित सजाती रही
मेरी सेहत को ऐसे बनाती रही
बचाने वो मुझको थी सबसे लड़ी
हर मुश्किल में आकर रही वो खड़ी
क्या भगवान जी से थी वो कम कहीं
सृष्टि उसकी भी ब्रह्मा से है कम कहीं
माँ की ममता के सम्मुख झुकते मस्तक सभी
पलते ब्रह्मांड उसमें नतमस्तक सभी
माँ से बढ़कर ना दुनिया में है कोई दूजा
करें चाहे मंदिर में रोज़ कोई पूजा ।

मन का अंधियारा

– डॉ. शिखा अग्रवाल,
सीकर, राजस्थान

कहाँ चला मन दिशाहीन हो,
राह नहीं दिखलाई पड़ती,
पथिक थका बेबस–सा लगता,
ठहराव नहीं, ठहराव कहीं ।

अंधी गलियाँ खत्म ना होतीं,
भूल–भुलैया बनती जातीं,
गोल–गोल आड़ी–तिरछी सब,
घूम वहीं फिर से ले आतीं ।

चलते–चलते रात हो गई,
सुबह नहीं अब ज्यादा दूर,
भोर लालिमा आसमान की,
देगी फिर आशा का नूर ।

पंछी फिर से चहक उठेंगे,
इस डाली से उस डाली,
जीवन का भटकाव हटाके,
हिम्मत फिर से है लानी ।

मन का अंधियारा हटने पर,
भूल भुलैया होगी खत्म,
आगे बढ़ने पर ही मिलते,
खुशियों के अनमोल रतन ।

माँ तेरी याद बहुत आई

– श्री. चक्रधर शुक्ल, कानपुर, उ.प्र.

माँ
छोटे–से–छोटे त्योहार को
बहुत बड़ा कर देती थी
अपने आस–पास
त्योहार खड़ा कर देती थी
माँ का उत्सवधर्मी होना
परिवार के लिए
शगुन सुखदाई
नवरात्र में
माँ
तेरी याद बहुत आई
माँ का भोर में जगना
कन्याओं के लिए
खीर–पूड़ी बनाना
वाकर लेकर–
पूजा करने,
मंदिर–मंदिर जाना
देर से घर आना/घर आकर–
न्यौती कन्याओं को बुलाना
सर पर तेल
माथे पर सिंदूर लगाना
प्रेम से खीर–पूड़ी खिलाना
उनसे बतियाना
दरवाजे तक पानी की धार देना
याद आने पर
लौंग–इलायची के साथ
पाँच रुपया, केला देना
हर नवरात्र में
माँ का यही क्रम रहा
आज वही क्रम
तुम्हारी बहू निभा रही है
आँखें नम हैं
आपके गुण गा रही है,
माँ !
आपकी याद बहुत आ रही है...

उनमें से मैं भी एक हूँ मन मेरा खिल रहा है
उनके जैसे महान नहीं फिर भी मैं एक हूँ
बाबा नागार्जुन साहित्य सुमन नीरज
बंकिम चंद्र चटर्जी कहानीकार विष्णु प्रभाकर
हुआ था इनका जन्म जून महीने में
पाया था मन भर संतोष इसी महीने में ।।

सांस्कृतिक संस्कार

– डॉ. अशोक,
पटना, बिहार

संस्कारों की धूप में
पलता है मन का वृक्ष
रीतियाँ देती हैं छाँव
घर की देहरी पर
दीपक सा उजाला है
परंपरा की बात
माँ की लोरी में
सभ्यता की धुन बसती
बचपन सीख लेता
पिता के शब्दों में
अनुशासन की रेखा
जीवन बनता है
त्योहारों की भीड़ में
एकता की मुस्कान
रिश्ते जुड़ जाते
मिट्टी की खुशबू में
पहचान की जड़ें हैं
संस्कृति बोलती
गुरु के चरणों में
ज्ञान का दीप जलता
अंधकार मिटता
बुजुर्गों की छाया
अनुभव की किताब है
मार्ग दिखाती है
नदियों की धारा में
सभ्यता की कहानी
निरंतर बहती है
मनुष्य के भीतर
संस्कारों की दुनिया
शांति रचती है

रास्ते जो घर ले जाते हैं

– श्री. मोहित.जे. संतोष,
श्री रामकृष्ण कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, कोवै, तमिलनाडु

यात्रा पर लंबी–लंबी हवा
दिखनेवाले डेर सारे पेड
इससे बेहतर कोई मंजर नहीं
इससे बेहतर कोई मंजर नहीं ।
खिडकी की ओर बैठा हूँ
कई विचारों में खोया हूँ
खूबसूरत हरियाली देख कर
खुशी की नदी में डूब रहा हूँ ।
कई नये चेहरे
कई नये शब्द
कई किस्म के लोग
और कई सारी भावनाएँ ।
चाहे कहीं भी जाओ
कहीं कोई देश जाओ
घर जैसा कोई जगह नहीं
घर लौटने का सुकून किसी में नहीं ।।

आईना

– श्री. राजश्री राठी,
अकोला, महाराष्ट्र

सच्चा साथी ही तो है वह
दुनिया की भीड़ में
चाहे कोई लाख गुमराह करे
किन्तु मुझ से मेरी
पहचान करवाता है आईना
यह चंचल मन
कई बार आ ही जाता है
लालसा के वश में
और चल पड़ता है
स्वार्थ की पगडंडी पर
यह सफर बड़ा सुहाना लगता है
किन्तु इससे मिलनेवाली
खुशी जल्द ही साथ छोड़ देती है
कितना आसान होता है
सब की निगाहों से बचते बचाते
अपने मन की करना
लेकिन मेरे हर गुनाह को
पकड़ लेता है यह आईना
मेरा ही प्रतिबिम्ब मुझे
धुंधला बताकर
स्वयं से निगाहें मिलाने नहीं देता
यह आईना, रुबरु कराता है
मेरी गलतियों को मुझ से
मुझे आनेवाले कल के लिए
बेहतर बनाने की जद्दोजहद में
लगा देता है यह शक्ति
और जब-जब मैं तपकर
कुंदन-सी निखर जाती हूँ
मेरी आँखों की चमक में
खुशियों के तमाम रंग भर देता है
और मेरे स्वागत में सब से पहले
मुस्काता है मेरा आईना ।

वंदना

माँ रिझाऊँ कैसे...

– श्री. व्यग्र पाण्डे, गंगापुर, राजस्थान

ये करामात तेरे आशीर्वाद से है
शब्दों से ये रिश्ते छुड़ाऊँ कैसे
रच-बस गया जो लेखन मुझमें
अन्यत्र खुद को मैं ले जाऊँ कैसे
तू मूढ़ को कालीदास बना देती है
माँ तेरी छवि से दृष्टि हटाऊँ कैसे
गीत कविता कहानी तेरी पूजा है
दूसरी वस्तुओं से सुख पाऊँ कैसे
बनी रहे ममता तेरी जीवन भर माता
अन्य आंचल में खुद को छुपाऊँ कैसे
व्यग्र हूँ लालायित हूँ तेरे दर्शन को
तू ही बता तुझको माँ रिझाऊँ कैसे

खरगोश

– डॉ. सतीश
'बब्बा',
चित्रकूट, उ.प्र.

एक दिवस अनन्या,
पापा के संग गई बाजार,
एक सेठानी सब्जीवाली,
रखी थी एक टोकरी खाली !
एक खरगोश थी सेठानी पाली,
अनन्या को खरगोश चाहिए,
नहीं बेचती जिसे सेठानी,
अनन्या की आँखें भर आईं !
तभी अनन्या को अपने,
दादा जी की याद आई,
पापा से फोन लेकर के,
दादा जी को फोन लगाई !
दादू मुझे खरगोश चाहिए,
कुछ भी हो अभी चाहिए,
दादा पोती का विश्वास देखिए,
इस रिश्ते की गहराई देखिए !
दादा ने समझाया,
चिंता नहीं करो तुम,
जल्दी मैं दो खरगोश लाऊँगा,
सेठानी का गुरूर मिटाऊँगा !
बात मान गई तुरंत अनन्या,
दादा पोती का रहस्य कोई जाने न,
खुशी से चेहरा दमक उठा है,
दादा पर भरोसा बड़ा है !!

पूर्णिका

– श्री. विनोद
कश्यप शर्मा 'योगी',
चण्डीगढ़

आईना आपका दुश्मन क्यों है ?
आपके हाथ में पत्थर क्यों है ?

भूखे पत्तों सा यह शहर क्यों है ?
आग से सबको इतना डर क्यों है ?

क्या चिंता भी है यज्ञ की वेदी,
आग ईश्वर है तो ईश्वर क्यों है ?

जिसके पीछे फ़साद चलता है,
वह शरीफ़ों का राहबर क्यों है ?

आजकल आपकी ग़िज़ा क्या है ?
आपकी बातों में ज़हर क्यों है ?

आपकी रुह भला बुझ गई कैसे,
आपका जिस्म मुनव्वर क्यों है ?

आपने क्या दिया मुसव्विर को,
शक़्ल तस्वीर में बेहतर क्यों है ?

नाम लिखना भी नहीं आता जिसको,
लिख रहा दूसरों का मुक़द्दर क्यों है ?

दर्द महफ़िल मिज़ाज क्यों इतना,
नाचता 'विनोद' रात-भर क्यों है ?

फलों का राजा आम

(काव्य तरंग/ कविता)

– श्री. सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह,
मधुबनी, बिहार

है फलों का राजा आम, मीठा ताजा आम,
सबको लुभाए चाहे जो भी हो जाए दाम ।
माँगकर खाने में भी लोग नहीं शरमाते हैं,
भले ही किसी का नाम हो जाए बदनाम ।
है फलों का राजा आम...

आम के लिए बच्चे कर जाते सीमा पार,
सीढ़ी लगा देते यदि पास हो कोई दीवार ।
लाल पीले आम देख मुंह से टपकती लार,
आम के बिना नहीं चलते हैं इनके काम ।
है फलों का राजा आम...

आम खाकर दुश्मन भी भूल जाते तलवार,
विचार बदल जाते, और करने लगते प्यार ।
जहाँ कहीं किसी से बात बिगड़ जाती कभी,
वहाँ उपहार स्वरूप आम कर सकते काम ।
है फलों का राजा आम...

आमों से भरे भरे लगते हैं आम के बाग,
आम की महक से जलते मन के चिराग ।
मलदहिया, कलकातिया और बंबइया आम,
फलों के राजा को सारे फल करते प्रणाम ।
है फलों का राजा आम...

भोजन के स्वाद को दुगना कर देता अचार,
आम के अचार को कोई नहीं करता इंकार ।
मेहमान चूस चूस कर खाते हैं आम अचार,
फिर जहाँ भी जाते, लेते हैं आम का नाम ।
फलों का राजा आम...

जहाँ देखो, नजर आता है आम का ठेला,
शर्म से मुँह छुपाकर, भाग गया है केला ।
लंगड़ा, बीजू, सेनुरिया और है हापुस आम,
लोग पहले मांगते आम, बाद में राम राम ।
फलों का राजा आम...

आम ने सबको बना दिया अपना दीवाना,
आम के कारण ही गर्म मौसम है सुहाना ।
आम रस मन को ऐसे ललचाता रहता है,
लोगों को कहाँ याद रहता है दुआ सलाम ?
फलों का राजा आम...

जन्मा हूँ मैं स्वहित के लिए नहीं
जन्मा हूँ मैं राष्ट्रहित उसके लिए ही
देश हमारा महान है वही तो प्रधान है
देशभक्त बनो सदा मन में संतोष भरो ।

ऐ जेठ की दुपहरी

– श्री. टीकेश्वर सिन्हा
'गब्दीवाला', घोटिया-बालोद,
छत्तीसगढ़

पाँचवी मंजिल की छत पर
धमेले से मसाले ढोती पुष्पा
अपनी गीली-नमकीन देह को
फूँक रही है,
ऐ जेठ की दुपहरी !
अब तू क्यों दहकती है बेमतलब ?

कूड़े-करकट के ढेर में
अर्द्धनग्न बदन नन्ही पिंकी खाने को
कुछ ढूँढ रही है,
ऐ जेठ की दुपहरी !
अब तू क्यों दहकती है बेमतलब ?

कोलतार की चिकनी सड़क पर
चैतीबाई कच्छोरा भीरे नंगे पाँव
अपने पोते को कंधे पर लिये
चल रही है,
ऐ जेठ की दुपहरी !
अब तू क्यों दहकती है बेमतलब ?

पाठकों के पत्र ...

सांस्कृतिक समन्वय और साहित्यिक शुचिता का जीवंत अनुष्ठान: 'शबरी शिक्षा समाचार' (मई 2026)

दक्षिण भारत की हृदयस्थली, तमिलनाडु के सेलम जनपद से विगत अठ्ठाईस वर्षों से निरवच्छिन्न रूप से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका 'शबरी शिक्षा समाचार' केवल एक मुद्रित पत्रिका नहीं है, अपितु यह अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिन्दी भाषा के संवर्धन और संरक्षण का एक भगीरथ प्रयास है । बिना किसी बाह्य अनुदान के, नितांत निस्वार्थ भाव से संचालित यह साहित्यिक अनुष्ठान अपने मई 2026 के अंक में वैचारिक प्रौढ़ता और सृजनात्मक विविधता का जो अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत करता है, वह किसी भी मूर्धन्य समीक्षक को चमत्कृत करने के लिए पर्याप्त है ।

पत्रिका का शुभारंभ 'संपादक की कलम से' होता है, जहाँ प्रधान संपादक एम. वेंकटेश्वरन ने अत्यंत प्रासंगिक और समसामयिक ज्वलंत विषयों पर अपना निर्भीक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है । वैश्विक पटल पर ईरान-यूक्रेन के मध्य चल रहे विध्वंसक युद्ध से लेकर भीषण ग्रीष्म ऋतु के तांडव और देश के चुनावी महासमर का वे सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं । इसके अतिरिक्त, युवा वर्ग और छात्रों के पठन-पाठन पर 'आईपीएल क्रिकेट' के नकारात्मक

प्रभावों पर उनकी चिंता तथा वैभव सूर्यवंशी जैसे उभरते प्रतिभाओं का उल्लेख, समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्व बोध को प्रमाणित करता है । इसी वैचारिक शृंखला में डॉ. नन्दकिशोर साह का आलेख 'विचारों का सफर : मन से मंजिल तक' मानव मस्तिष्क की असीम क्षमताओं और वैचारिक तरंगों का मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक अन्वेषण करता है, जो पाठकों के अंतर्मन को उद्वेलित कर नूतन संभावनाओं के द्वार खोलता है ।

साहित्यिक मूल्यांकन की दृष्टि से इस अंक का काव्य खंड अत्यंत समृद्ध, बहुवर्णी और मानवीय संवेदनाओं के चरम उत्कर्ष को परिलक्षित करनेवाला है । जहाँ एक ओर श्री सूबेदार कृष्णदेव प्रसाद सिंह की रचना 'माँ एवं मातृभूमि' देशभक्ति और राष्ट्र के प्रति सर्वोच्च बलिदान के आदर्शों को स्थापित करती है, वहीं दूसरी ओर 'घर एक मंदिर' जैसी कविताएँ पारिवारिक मूल्यों और संबंधों की ऊष्मा का श्लाघनीय चित्रांकन करती हैं । डॉ. अर्जुन गुप्ता 'गुंजन' की रचना 'फागुन फिर आकर चला गया' में प्रकृति के शृंगार और विरह वेदना का जो तादात्म्य स्थापित किया गया है, वह अत्यंत मार्मिक है । साथ ही, सुनील प्रकाश भारद्वाज और नवीन माथुर पंचोली की ग़ज़लें जीवन के यथार्थ, संबंधों की क्षणभंगुरता और मानवीय विडंबनाओं पर दार्शनिक प्रहार करती हैं ।

गद्य विधा के अंतर्गत, समकालीन सामाजिक और पारिवारिक विघटन को रेखांकित करती लघुकथा 'क्या नाम दूँ ?' दांपत्य जीवन की जटिलताओं और खोखलेपन पर करारा व्यंग्य करती है । वहीं, बाल मनोविज्ञान को केंद्र में रखकर रचित 'मोबाइल की लत छूटी' एक अत्यंत सोद्देश्य और शिक्षाप्रद कथा है, जो आधुनिक तकनीकी दासता से मुक्त होकर बच्चों को उनके नैसर्गिक खेलों और बालपन की ओर लौटने का मार्ग प्रशस्त करती है ।

इस पत्रिका की सर्वोत्कृष्ट विशेषता इसका भाषाई और सांस्कृतिक समन्वय है । यह उत्तर और दक्षिण की सांस्कृतिक धरोहरों के मध्य एक सुदृढ़ सेतु का निर्माण करती है । 'महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार' के अंतर्गत 'गणनाद नायनार' के त्याग और शिवभक्ति का पावन आख्यान, तथा महान तमिल संत तिरुवल्लुवर के अनमोल वचनों का सरस अनुवाद, पाठकों को दक्षिण भारत की समृद्ध आध्यात्मिक परंपरा से साक्षात् कराते हैं । इसके अतिरिक्त 'देववाणी संस्कृत' में 'आत्मबलिदानी महात्मा' की कथा और **'தமிழமுது'** (तमिलामृत) स्तंभ, पत्रिका को बहुभाषी और सर्वसमावेशी स्वरूप प्रदान करते हैं । 'नवांकुर' स्तंभ के माध्यम से नवोदित बाल रचनाकारों को जो मंच प्रदान किया गया है, वह भविष्य के साहित्यकारों को गढ़ने का एक स्तुत्य प्रयास है ।

– डॉ. राहुल प्रताप सिंह,
प्रबंध–निदेशक एवं प्रबंध–संपादक,
अक्षरवाणी संस्कृत समाचार पत्र

एकल प्रयास से हिन्दी भाषा के उत्तरोत्तर प्रचार–प्रसार के लिए सहृदय धन्यवाद आदरणीय ।

इस माह की पत्रिका में गद्य–पद्य में विभिन्न विधाओं की रचनाएँ पढ़ने को मिली । किशोर–किशोरियों की रचनाओं में भारत की साहित्यिक–सांस्कृतिक भविष्य दिखाई देती है । हार्दिक बधाई शुभकामनाएँ नमन आदरणीय ।

– श्री. विमल कुमार, पूर्णियाँ, बिहार

बहुत ही पठनीय, समसामयिक और उत्कृष्ट रचनाएँ। अनहद हार्दिक बधाइयाँ। रचना को स्थान देने के लिए बहुत-बहुत नवाज़िश और हृदय से आत्मीय अभिवादन।

– श्री. नलिन खोईवाल,
इंदौर,म.प्र.

बहुत बहुत धन्यवाद प्रिय श्रीधर सेलम जी। पत्रिका का यह अंक बहुत सुंदर संकलन है।

– विद्यावाचस्पति डॉ. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

बधाई एक नवीन अंक के लिए, धन्यवाद स्तरीय पत्रिका साझा करने और पढ़ने का अवसर देने के लिए।

– श्री. शैली, लखनऊ, उ.प्र.

कुछ कविताएँ सचमुच हृदय को स्पर्श कर गयी।

– श्री. मनोज कुमार झा, असम

आदरणीय संपादक महोदय,

आप संपादकीय में समसामयिक घटनाओं का बहुत ही खूबसूरत ढंग से विश्लेषण करते है। अनमोल बचन जिंदगी जीने की राह को आसान करते है। आपको बहुत बहुत साधुवाद।

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

साहित्यकारों से निवेदन है कि वे स्वरचित, अप्रकाशित रचनाएँ मात्र भेजें। अन्य पत्रिकाओं व सोशियल मीडिया या अन्य जगहों पर प्रकाशित रचनाएँ कभी नहीं भेजें।

नवांकुर

डर

– लक्षिता श्रीधर,
बारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु

आज हम डर के बारे में बात करेंगे। हर किसी इंसान को कुछ चीज से डर लगता है। वह कुछ भी हो जैसे कि, अंधेरा, कुत्ता, ऊँचाई आदि। किन्तु हर एक इंसान के लिए उस डर पर काबू पाना बहुत जरूरी होता है। डरने से हम हार जाते हैं। किन्तु उसी डर को हम हमारी ताकत बना सकते हैं। डरना गलत नहीं है। लेकिन डर के आगे झुकना कायरता है। डर हमें लड़ना सिखाता है। डर को अपनी कमज़ोरी नहीं, बल्कि अपनी ताक़त बनाओ। डर से लड़ना सीखोगे तो, डर ही हमें उस डर से लड़ना सिखाएगी। डर हर किसी इंसान को हर किसी समस्या से बाहर निकलने की रास्ता बताती है। हम उस डर को कैसे देखते हैं उस पर निर्भर करता है। इसलिए कहते हैं कि, डर किसी की ताकत होता है और किसी की कमजोरी।

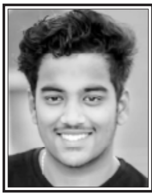

जरूरत से ज्यादा

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै,
तमिलनाडु

एक छोटा सा फूलों का पौधा
हर दिन उसे पानी दिया गया
प्यार से उम्मीद से दिया गया
खिलेगा एक दिन वह खिलेगा
एक दिन पानी ज्यादा हो गया
जरूरत से ज्यादा, हाँ ज्यादा
जडें उसकी कमजोर होने लगी
पौधा जो बढ रहा था वह मर गया ।

कभी कभी जरूरत से ज्यादा
चाहे प्यार हो या वह परवाह
जिन्दगी को वह कभी न बढाता
सब कुछ वह खतम कर देता
हर चीज की एक सीमा होती है
कभी कभी खूबसूरत चीजें मिट जाती हैं
जरूरत से ज्यादा कभी नहीं देना
जरूरत से ज्यादा देकर मत पछताना ।

नवांकुर–रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए । खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें । रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं ।

कृपया आयु प्रमाण–पत्र की प्रति साथ भेजें ।

86,400

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस
कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

एक दिन सुबह, एक आदमी के बैंक खाते में 86,400 रुपये जमा हुए थे । यह देखकर वह आदमी बहुत खुश था । कुछ देर बाद इस अकाउंट से 60 रुपये चोरी हो गई । लेकिन वह आदमी वह 60 रुपये के लिए परेशान नहीं हुआ था । बाकी पैसे के साथ खुश था । इस जगह में कुछ लोग शायद वह 60 रुपये के लिए परेशान होंगे । लेकिन आजकल की दुनिया में कई लोग बाकी पैसे के साथ खुश रहते हैं । पर सोचिए, अगर इस जगह में पैसे के बदले वक़्त होते हैं तो ? 1 दिन में 86,400 सेकंड है, लेकिन जब, कुछ 60 सेकंड एक इंसान को एक दिन में बुरा हुआ, तो वह बाकी पूरे दिन को केवल 60 सेकंड को सोच कर खोने की क्या जरूरत है ? उस वक्त कितनी भी बुरा हो, कोई बात नहीं, केवल एक 60 सेकंड को अपनी पूरा दिन को बुरा होने मत दीजिए, क्योंकि वक्त पैसे से बहुत ज्यादा कीमती है ।

 – श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

पठितौ, अभिरुचितौ, अनूदितौ

अद्भुत चित्रम्

तत्र एक: राजा आसीत् । सः चित्रकला, गायनम् इत्यादीनां कलानां प्रोत्साहनं कृतवान् । एकदा सः एकस्मिन् प्रासादे चित्रकला स्पर्धाया: आयोजनं कृतवान् । सर्वे चित्रकाराः सुन्दराणां चित्राणि लिखित्वा यान्ति स्म । अन्ते एकः युवकः आगतः । सः दृष्टवान् यत् तस्य कृते स्थानं नास्ति । सः प्रवेशद्वारसमीपे अल्पे स्थाने उपविश्य किमपि चित्रलेखनं कृत्वा प्रस्थितवान् ।

चित्राणां मूल्याङ्कनं कृत्वा पुरस्कारं दातुं राजा आगतः । यदा स: अन्त: प्रविष्टवान् सः अतीव क्रुद्धः अभवत् । सः मन्त्रिणम् आहूय अवदत्, ''बाह्यद्वारे लम्बमानं मलिनं कृष्णं पटं निष्कासयतु ।'' मन्त्री अपि प्रवेशद्वारं गत्वा पुनः आगत्य अवदत्, ''भगवान् ! प्रवेशद्वारे यत् लम्बते तत् न मलिनं कृष्णं पटं, चित्रम् एव'' इति ।

राजा अपि तत् दृष्टवान् । तत्र लम्बमानं मलिनं कृष्णं पटं इव वस्तुतः चित्रम् आसीत् । तस्य चित्रस्य प्रथमपुरस्कारं राजा प्रयच्छत् ।

स: चित्रकलाकारः युवकः राजा रविवर्मा आसीत्, यः पश्चात् महान् चित्रकारः इति प्रसिद्धः अभवत् ।

ममतां त्यजतु , शान्तिं प्रापतु

एकः राजा सर्वसुविधायुक्तेऽपि शान्तिं प्राप्तुं वनं ययौ । तत्र मुनिं दृष्ट्वान् । राजामुनिं पूजयित्वा तस्य समक्षं स्वस्य संशयं प्रकटितवान् ''स्वामिन्, सर्वसुविधायुक्तस्यापि मम मनसि शान्तिर्नास्ति ।''

मुनिः प्राह ''स्वदेशं पुत्राय समर्प्य आगत्य मया सह उपविष्टः । राजा ''उक्तवान् ममपुत्रोबालएवास्ति, अद्यापि राजा भवितुं न योग्यः ।''

''तदा त्वं देशं मम हस्ते ''समर्पय'' इतिसःअवदत् । राजाअङ्गीकृतवान् । ऋषिः शपथं कृतवान् । राजा अपि आज्ञाम् अकरोत् ।

अथ मुनिः पप्रच्छ ''इदानीं त्वं किं करिष्यसि ।''

राजा अवदत्, ''स्वामी, अहं कोषात् किञ्चित् धनं गृहीत्वा किञ्चित् व्यापारं कर्तुम् इच्छामि !''

मुनिः अपृच्छत् ''तत् साधुकथा ! त्वया मम कृते देशः दत्तः, कथं मम कोषात्

धनं गृह्णीष्यति ?''

''समीपस्थं देशं गत्वा किञ्चित् व्यापारं कृत्वा जीवनयापनं करोमि ।'' उक्तवान राजा ।

तदर्थं मुनिः अपृच्छत्, ''यदि एवम् अस्ति चेत् तर्हि त्वंतत्व्यापारंअत्र एव कर्तुं शक्नोषि ।

राजा विस्मितः सन् पृष्टवान् – ''अत्र !''

ऋषिः अवदत् – ''आम्, अहम् अस्य देशस्य प्रबन्धनस्य दायित्वं भवतः उपरि न्यस्यामि, अहं भवतः कृते वेतनमपि दास्यामि'' इति । अनुमोदित्वाराजादेशंशासितवान् । सःशान्तिंप्राप्नोत् ।

न्यायः – यदा राजा स्वदेशः इति विचारेण देशस्य शासनं कृतवान् तदा सः शान्तिं न प्राप्नोत् । यदा सः वेतनं प्राप्य देशं स्वकीयमिति विचारं विना प्रबन्धयति स्म तदा सः शान्तिं प्राप्नोत् ।

नीति : ''मम'' इतिभावःदुःखंददाति ।
कर्तव्यमितिभावःशान्तिंददाति ।

महान

कहने को क्या है कोई कुछ भी कह सकते
करके देखने में हर कोई सफल नहीं पाते
उपदेश देना जितना आसान है सच जानो
पालन करना बहुत ही कठिन है बात मानो
स्वयं को बढ़ाना किसी के हाथ नहीं है
अपने ही हाथ में अपनी उन्नति रही है
बाहर से कभी कोई आकर सुधार नहीं सकता
बनो अपने आप महान कोई रोक नहीं सकता ।

संस्कृत अनुवाद :

वक्तुं शक्यते किमपि, कोऽपि वक्तुं शक्नोति ।
कृत्वा तु पश्यन् सर्वः सफलो न भवति ।
उपदेशदानं यथा सुलभं सत्यं जानीहि,
पालनं तु अतीव कठिनम् इति मन्यस्व ।
आत्मनः उन्नयनं कस्यचित् हस्ते नास्ति,
स्वहस्ते एव स्वस्य उन्नतिः वर्तते ।
बहिः कश्चिद् आगत्य कदापि न सुधारयति,
स्वयमेव महान् भव, कोऽपि न निवारयितुं शक्नोति ।

தமிழமுது – நொய்ய உரையேல்

– எம். ஸ்ரீதர்,

நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

பூங்குயில் பாடினால் நல்ல சங்கீதம் குழந்தையின் அழுகையும் நல்ல சங்கீதம். திரைப்படப் பாடலின் இந்த வரிகள் அனைவராலும் ரசிக்கப்படக்கூடியவைகளாக இருக்கின்றன. மனிதன் இயற்கையோடு இரண்டறக் கலந்து பிறந்தவன். காக்கைகளை நாம் நம் முன்னோர்கள் எனக் கருதுகிறோம். அவைகளுக்கு உணவும் தண்ணீரும் தந்து மகிழ்கிறோம். ஆனால் காக்கையின் குரலை யாரும் ரசிப்பதில்லை. குயில் நம் கண்களுக்கு தெரிவதில்லை. மறைந்தே வாழ கற்றுக் கொண்ட அந்த குயிலின் குரலானது அனைவரையும் மயங்கச்செய்கிறது.

மொழி என்பது உள்ளத்தின் உணர்வுகளை வெளிப்படுத்தக்கூடிய ஒரு வழி. இனிமையான சொற்களை பயன்படுத்தி இதயத்தின் வெளிப்பாடுகளை பிறருக்கு தெரியச் செய்யும்போது அன்பும் இன்பமும் ஆறாய் ஓடுகிறது.

இனிய உளவாக இன்னாத கூறல்
கனிஇருப்பக் காய்கவர்ந் தற்று

என்கிறார் தெய்வப்புலவர் திருவள்ளுவர். ஒருவருக்கு நன்மை தரும் இனிய சொற்கள் பல இருக்க, அவற்றை விடுத்துத் துன்பம் தரும் கடுஞ்சொற்களைப் பேசுவது, சுவையான கனி (பழம்) இருக்கும்போது அதைப் பறித்து உண்ணாமல், சுவை இல்லாத காயைப் பறித்து உண்பதைப் போன்றது. ஒரு சொல் வெல்லும் ஒரு சொல் கொள்ளும் என்பதும் நாம் அறிந்த உண்மையே.

கடுஞ்சொற்கள் அல்லது சுடு சொற்கள் கேட்பவரின் மனத்தை புண்ணாக்கி விடுகின்றன. கடுஞ்சொற்களை பயன்படுத்தும் போது உறவுகள் தூர விலகிச் சென்று விடுகின்றன. இனிய சொற்களை பேசும்போது பேசுபவரும் கேட்பவரும் இனிமையை அனுபவிக்கின்றனர். ஒருவர் மனது புண்படும்படி பேசும்போது அந்த காயமானது என்றென்றும் ஆறாமல் தொடர்ந்து வலியை கொடுக்கக் கூடியதாக அமைந்துவிடுகிறது. வாழ்வின் தன்மையை நன்கு உணர்ந்த ஔவையார் **நொய்ய உரையேல்** அதாவது பிறர் மனம் உடைந்து நொறுங்குமாறு பேசி பழகாதே என்று அறிவுறுத்துகிறார்.

இனிமையான சொற்களைப் பேசி தேவையானதை மட்டும் அடுத்தவருக்கு எடுத்துரைத்தல் போதும். தீய கொடுஞ்சொற்களைப் பயன்படுத்தி பிறர் மனதை புண்படுத்துதல் ஒருபோதும் நன்மையை தருவதில்லை என்ற உண்மையை உணர்த்துகிறார் நமது ஔவையார்.

தொடரும்...

அருள் உலா
திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
திருவன்னியூர்

- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'
Dr. என். சந்திரசேகர், M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

ஞானங் காட்டுவர் நன்னெறி காட்டுவர்
தானங் காட்டுவர் தம்மடைந்ததார்க்கெலாத்
தானங் காட்டித்தன் தாலிடைந்ததார்கட்கு
வானங் காட்டுவர் போல் வன்னியூரரே
- ஸ்ரீ நாவுக்கரசு ஸ்வாமிகள் அருளிய
5-ஆம் திருமுறைப் பாடல்

ஒருவர்தாம் செய்த தவற்றை உணர்ந்து, திருந்தி வாழ முயன்றால் வாழ்வில் உன்னத நிலை அடையலாம்; இழந்த பெயர், புகழ், செல்வம் எல்லாம் பெறலாம் என்பதன் விளக்கமாக அமைந்த திருத்தலமே திருவன்னியூர் அருட்தலம் ஆகும். மக்கள் வழக்கில் இத்தலம் அன்னியூர், அன்னூர் என்று அழைக்கப்படுகின்றது. மூவர் முதலிகளால் பாடல்பெற்ற திருமுறை திருத்தல வரிசையில் இத்தலம் காவிரியாற்றின் தென்கரையில் அமைந்துள்ள 62ஆவது திவ்ய திருத்தலம் ஆகும்.

அருள் வரலாறு :

முன்னொரு சமயம் தக்ஷப்ரஜாபதியானவன் சிவபெருமானை அவமதிக்கவேண்டும் என்பதற்காக, அவரை மட்டும் அழைக்காமல் மற்ற தேவர் அனைவரையும் அழைத்து மிகப் பெரிய யாகம் ஒன்று செய்தான்.

சர்வேஷ்வரனை அவமதிக்கும் செயலுக்கு உடந்தையான தேவர்களை பத்ரகாளியும், வீரபத்ரரும் தண்டித்தனர்.

இவ்வாறு பத்ரகாளி மற்றும் வீரபத்ரர் முதலானோரால் தண்டனைக்கு உள்ளாகி திருத்திய அக்னிதேவன் இந்தத்தலம் வந்து திருக்குளம் அமைத்து தினம் அதில் நீராடி ஈசனிடம் தமது

தவறை மன்னித்து தமக்கு மீண்டும் இழந்த பெயர், புகழ், ஆற்றல் எல்லாம் கிடைக்க அருள்புரிய வேண்டும் என்று உள்ளம் உருக வேண்டினான்.

பக்தர் குறைகளை உடனே போக்கும் ஆசுதோஷியான ஸ்ரீ சிவபெருமான் அக்னிக்கு அருள்பாளித்தார். அக்னி வேதவனும் மீண்டும் பொழிவு பெற்றான்.

அக்னிக்கு வன்னி என்று ஒருபெயரும் உண்டு. அக்னிதேவன் வழிபட்டதால் இவ்வூர் வன்னியூர் என அழைக்கப்பட்டுப்பிறகு அன்னியூர் ஆனது.

அக்னிதேவனால் அமைக்கப்பட்டதால் திருக்குளம் அக்னி தீர்த்தம் எனவும் அழைக்கப்படுகிறது.

காத்யாயிணி :

காத்யாயண ரிஷியின் மகளாக, காத்யாயிணியாகப் பிறந்த பார்வதி தேவியார் இந்தத் தலத்தில் ஈசனை மணக்க தவம்புரிந்து, இத்தலம் அருகே உள்ள திருவீழிமிழலை திருத்தலத்தில் சிவனை மணந்தார்.

ஆகையால் இத்தலம் திருமணத் தடை நீக்கும் தலமாகவும் சிறப்பிக்கப்படுகிறது.

சிறப்புக்கள் :

1. திருக்கோயிலில் உள்ள அக்னி தீர்த்தத்தில் நீராடி ஸ்ரீ அக்னிபுரீஷ்வரருக்கு கோதுமையினால் தயாரித்த ப்ரசாதம் நிவேதனம் செய்து வழிபட்டால் இரத்த அழுத்தம், உஷ்ணம் தொடர்பான வியாதிகள் அகலுவது அனுபவம்.
2. தடைபட்ட, தாமதப்பட்டுவரும் திருமணங்கள் இத்தலம் வந்து ஈசனையும், அம்பிகையையும் வழிபட தாமதமின்றி விரைவில் நடக்கும்.
3. வீடுகட்டும் பணி தடையின்றி நடைபெற அருளும் அற்புதத் தலமாகவும் இத்தலம் திகழ்கின்றது.
4. கருவறை சுவற்றில் அப்பர், அக்னி பகவான், கௌரீ, சிவலிங்கத்தின் மீது பால் சொறியும் வண்ணம் காமதேனு, ரிஷபாரூடர் முதலான சிற்பங்கள் உள்ளன.

5. அன்னியூர் என்ற பெயரில் இரண்டு திருமுறை திருத்தலங்கள் உள்ளன. ஒன்று காவிரி வடைகரைத்தலம், மற்றொன்று காவிரி தென்கரைத்தலம். காவிரி வடகரையில் அமைந்துள்ள அன்னியூரைப் பொன்னூர் என்று அழைக்கின்றனர்.

ஸ்ரீ ஸ்வாமி - ஸ்ரீ அம்பாள் :

இறைவன்	:	ஸ்ரீ அக்னிபுரீஷ்வரர்
இறைவி	:	ஸ்ரீ கௌரீ
தலமரம்	:	வன்னி மரம்
தீர்த்தம்	:	அக்னி தீர்த்தம்
வழிபட்டு அருள் பெற்றோர்	:	அக்னி பகவான், ஸ்ரீ பார்வதி தேவியார் முதலானோர்.

அருட்பதிகங்கள் :

ஸ்ரீ அப்பர் பெருமான் இத்தலத்து ஈசனை பாமாலை சூட்டி மகிழ்ந்துள்ளார்.

தரிசன காலம் :

காலை 07.30 மணி - பகல் 12.00 மணி வரை
மாலை 05.00 மணி - இரவு 08.00 மணி வரை

தொடர்பு முகவரி :

ஸ்ரீ அக்னிபுரீஷ்வரர் திருக்கோயில்,
அன்னியூர் - 612 201.
திருவாரூர் மாவட்டம்.

தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :
0435-2449598

அமைவிடம் :

கும்பகோணம்-காரைக்கால் மார்க்கத்தல் S.புதூர் அருகில் உள்ள வடமட்டத்தில் இருந்து திருவீழிமிழலை செல்லும் பாதையில் திருவன்னியூர் திருத்தலம் அமைந்துள்ளது.

கும்பகோணத்தில் இருந்து திருவன்னியூருக்கு நகரப் பேருந்து வசதி உள்ளது.

திருவீழிமிழலையில் இருந்து சுமார் 4 கி.மீ. தொலைவில் இத்தலம் அமைந்துள்ளது.

ஸ்ரீ கௌரீ பார்வதி ஸமேத
ஸ்ரீ அக்னிபுரீஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.

Scan this QR code to follow
SHABARI BOOK SALES, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

Scan this QR code to follow
SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM
WHATSAPP CHANNEL

இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

Send MONEY ORDER or DD to
SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN
PHONE : 9842765414

SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

1.	Place of Publication	:	Salem - 636 001
2.	Periodicity of its Publication	:	Monthly
3.	Printer's Name	:	D. Sivakumar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001.
4.	Publisher's Name	:	M. Sridhar
	Nationality	:	Indian
	Address	:	37, First Agraharam, Salem - 636 001.
5.	Editor's Name	:	M. Venkateswaran
	Nationality	:	Indian
	Address	:	197, Second Agraharam, Salem - 636 001.
6.	Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital	:	M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001.

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.06.2026. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

JOIN Vani Vikas

Spoken Hindi Examination

Learn Spoken Hindi in Simplest Way

வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

வாய்மொழி தேர்வு

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

SHABARI SIKSHA SANSTHAN,
Second Agraharam, Salem - 636 001.
Visit us at https://shabari.in/

Posted at Salem HPO 636 001. June-2026

Published on 5th June-2026

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. : TN/WR/SLM(E)/121/2024-2026
Licenced to post without prepayment. TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.

Please quote your subscription number in all correspondences.

If undelivered please return to
Shabari Siksha Samachar,
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.

To

____

____

____

____

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

Shublekha

Hindi Hand Writing Book

Learn the letters | Write it properly
Let us all write | Loving the letters
Best Practice | Perfect result for the beginners.

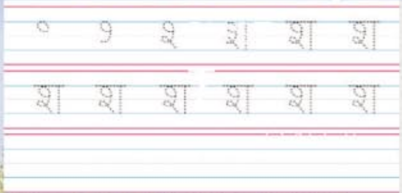

₹ 100.00

SHABARI BOOK HOUSE

"Shabari Palace", 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
Whatsapp : 94431-65414
Phone : 94433-65414, 98427-65414
Visit us at https://books.shabari.org/